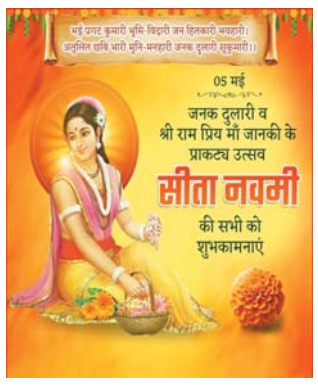


दैनिक
# सांध्य प्रकाश
भोपाल की धड़कन

वर्ष 54/ अंक 267/ पृष्ठ 8 / मूल्य ₹ 2.10

संस्थापक- स्व. सुरेंद्र पटेल

■आर.एन.आई 22296/71 ■डाक पंजीयन मप्र/भोपाल/125/12-14

भोपाल, सोमवार 05 मई 2025 भोपाल से प्रकाशित

dainiksandhyaprakash.in


## पाक से तनाव के बीच पीएम मोदी ने रक्षा सचिव सिंह से की तैयारियों पर चर्चा

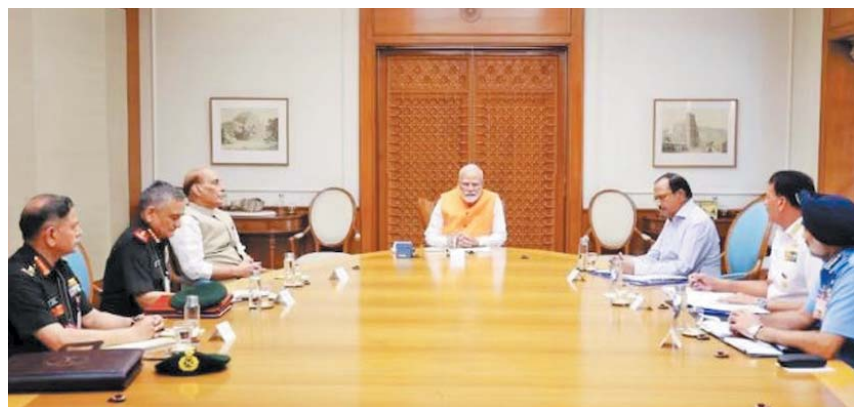

**नई दिल्ली।** रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने पहुंचे। पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से बढ़ते तनाव के बीच यह अहम मुलाकात चल हुई है। इससे पहले वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने रविवार को प्रधानमंत्री से मुलाकात की थी। भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव की पृष्ठभूमि में यह अहम बैठक हुई थी। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने भी शनिवार को प्रधानमंत्री से मुलाकात की थी और उन्हें अरब सागर में महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की समग्र स्थिति से अवगत कराया था।

### सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक हुई थी

पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के एक दिन बाद सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) की बैठक हुई थी। हमले में आतंकियों ने 26 लोगों की निर्मम हत्या कर दी गई थी। सरकार ने आतंकवाद को जड़ से खत्म करने के भारत के राष्ट्रीय संकल्प को लेकर अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। पीएम मोदी ने कहा कि हमले के लिए जिम्मेदार आतंकवादियों और इसके पीछे के साजिशकर्ताओं को कड़ी सजा मिलेगी। सरकार ने सशस्त्र बलों को भारत के पलटवार के तरीके, लक्ष्य और समय पर निर्णय लेने के लिए पूरी आजादी भी दी।

### लोक कल्याण मार्ग स्थित पीएम आवास पर बैठक

राष्ट्रीय राजधानी में लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर हुई यह बैठक पीएम की अध्यक्षता में उस बैठक के कुछ दिनों बाद हुई, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान और तीनों सेनाओं के प्रमुख शामिल हुए थे। बैठक में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल भी मौजूद थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसके पहले एयरचीफ मार्शल एपी सिंह ने रविवार को हुई मीटिंग में पीएम को बताया कि एयर फोर्स अलर्ट है। उन्होंने कहा कि पश्चिमी सीमा पर हमारा डिफेंस नेटवर्क भी पूरी तरह एक्टिव है और राफेल जैसे फाइटर जेट भी तैयार हैं।

### आर्थिक नकेल की तैयारी

मोदी सरकार अब पाकिस्तान की आतंकवाद फंडिंग रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे आईएमएफ और एफएटीएफ के पास जाने की तैयारी कर रही है, ताकि पाकिस्तान को मिलने वाली आर्थिक मदद में कटौती कराई जा सके। मोदी सरकार का साफ संदेश है कि आतंक का समर्थन करने वालों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग किया जाएगा।

## तेलंगाना से इंदौर जाने का समय होगा आधा

### गडकरी ने किया सड़क परियोजनाओं का शिलान्यास

**हैदराबाद।** केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी सोमवार को तेलंगाना में 3900 करोड़ रुपये की सड़क परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यहां आने के बाद मुझे जनता की समस्या का समाधान करने का मौका मिला है। केंद्रीय मंत्री ने घोषणा की है कि अगले 2 सालों में तेलंगाना 2 लाख करोड़ रूपये नए रोड बनाए जाएंगे।

केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि जहां वाटर, पावर, ट्रांसपोर्ट और संचार जहां ये चार चीजें होती हैं वहां उद्योग व्यापार अपने आप आ जाता है। इसलिए हमने करीब 1 लाख करोड़ नए एक्सप्रेस बनाने का संकल्प लिया है। ताकि हर जगह व्यापार बढ़ सके। उन्होंने कहा कि अमेरिका धनवान इसलिए बना क्योंकि वहां की सड़के अच्छी हैं। अब तेलंगाना की बारी है।

**20 की बजाय 10 घंटे में पहुंच जाएंगे इंदौर-** केंद्रीय मंत्री ने कहा कि नए एक्सप्रेस वे बनने से तेलंगाना से इंदौर जाने का समय आधा हो जाएगा। पहले जो 20 घंटे का समय लगता था वो महज 10 घंटे हो जाएगा। ये विश्वास मैं आपको दिलाता हूं। इस दौरान केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी 26 नई सड़कों का शिलान्यास किया। नितिन गडकरी ने कहा कि आज हर युवा को रोजगार, किसान को फसल के सही दाम चाहिए और सही में हर गरीब को मकान और रोटी चाहिए है। हमारा किसान केवल अन्नदाता नहीं बल्कि ऊर्जादाता और ईधनदाता, हवाई ईधनदाता, विटामिन दाता, हाइड्रोजन दाता बने।

### सांध्यप्रकाश विशेष

## शादी की 33वीं वर्षगांठ पर शिवराज सिंह चौहान ने पत्नी के साथ किया पौधरोपण

**भोपाल।** मध्यप्रदेश के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपनी शादी की 33वीं वर्षगांठ पर एक साकारात्मक कदम उठाया। उन्होंने अपनी पत्नी साधना सिंह के साथ मिलकर पौधरोपण किया, और यह अवसर जनकल्याण की महत्वाकांक्षा और पर्यावरण संरक्षण के संदेश से सराबोर हो गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर तस्वीर भी सांझा की। इस दौरान उन्होंने लिखा कि, तैंतीस सालों का समय तो जैसे बहुत लंबा नहीं लगता। यह यात्रा दो आत्माओं का मिलन है जो एक-दूसरे के साथ जीवन के हर पल में जुड़ी रही। साधना मेरी जीवनसंगिनी ही नहीं, बल्कि मेरे साथ एक सशक्त साथी भी हैं, जो न केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों में मेरी मदद करती हैं, बल्कि समाज सेवा के कार्यों में भी बराबरी से साथ देती हैं, शिवराज सिंह चौहान ने भावुक होते हुए कहा।

उनके अनुसार, 33 वर्षों का यह सफर एक साथ नहीं, बल्कि अनेक जन्मों का आभास कराता है। हमने मिलकर न केवल परिवार के आदर्श को स्थापित किया, बल्कि बच्चों को संस्कार और कर्तव्य की अहमियत भी सिखाई, शिवराज सिंह चौहान ने कहा। उन्होंने अपनी पत्नी को हमेशा एक आदर्श जीवनसंगिनी बताया, जो परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए समाज में बदलाव लाने की कोशिश करती हैं।

## सीएम योगी का आदेश, सरकारी भवनों में प्रयोग होगा गाय के गोबर से बना पेंट

**लखनऊ।** निराश्रित गोवंश संरक्षण केंद्रों को आत्मनिर्भर बनाने की कसरत में जुटी सरकार गाय के गोबर से तैयार पेंट को बढ़ावा देगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोबर से निर्मित प्राकृतिक पेंट का प्रयोग सरकारी भवनों में करने के निर्देश दिए हैं। प्रदेश में इस पेंट को तैयार करने के लिए प्लांट्स की संख्या बढ़ाने को भी गया है।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पशुपालन और दुग्ध विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार हैं। इन क्षेत्रों में आजीविका, पोषण सुरक्षा और महिला सशक्तिकरण की भी व्यापक संभावनाएं हैं। तकनीक, निवेश और नवाचार को बढ़ावा देकर इस क्षेत्र को और सशक्त किया जाना चाहिए। उन्होंने मंडल स्तर पर देसी नस्ल की गायों के मध्य और गो-उत्पाद बनाने वाली संस्थाओं के बीच प्रतियोगिता आयोजित कराने के भी निर्देश दिए हैं। रविवार को पशुपालन एवं दुग्ध विकास विभाग की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि निराश्रित गोवंश संरक्षण केंद्रों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं। अच्छे गो आश्रय स्थलों को चिन्हित कर सम्मानित किया जाए।

इस बैठक में बताया गया कि वर्ष 2024-25 में दुग्ध उपार्जन 3.97 लाख लीटर प्रतिदिन दर्ज किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 10 प्रतिशत अधिक है। समितियों की सदस्यता में आठ प्रतिशत की वृद्धि हुई है और 24,031 दुग्ध उत्पादकों को प्रशिक्षण मिला है। वाराणसी, अयोध्या, बरेली, मिर्जापुर, मथुरा व बस्ती में प्रमुख दुग्ध संघों को 8.18 करोड़ रुपये से ज्यादा का लाभ हुआ है।

## 20 लाख लेते पकड़े गए बीएपी विधायक जयकृष्ण पटेल, सवाल वापस लेने के लिए मांगे थे 10 करोड़

**जयपुर।** एंटी करप्शन ब्यूरो ने बागीदौरा (बांसवाड़ा) से बीएपी विधायक जयकृष्ण पटेल को जयपुर स्थित सरकारी आवास से 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। यह राजस्थान में पहली बार है जब किसी विधायक को रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया है।

पटेल पर आरोप है कि उन्होंने विधानसभा में खनन विभाग से जुड़े सवाल वापस लेने के लिए 10 करोड़ की मांग की थी। बाद में सौदा 2.5 करोड़ में तय हुआ और रविवार को पहली किश्त के रूप में 20 लाख रुपये लिए जा रहे थे।

**कैसे हुआ खुलासा-** शिकायत 4 अप्रैल को मिली थी। सत्यापन के बाद विधायक और उनके सहयोगियों के कॉल सर्विलांस पर लिए गए। बातचीत में पैसे की मांग की पुष्टि हुई। 3 मई को पटेल ने शिकायतकर्ता से मिलने की बात कही और 4 मई को डील फाइनल हुई।

## कानपुर में पति-पत्नी व उनकी 3 बेटियां जिंदा जली, बेटी का शव मां से चिपका मिला

**कानपुर।** कानपुर में रविवार रात 8 बजे एक 4 मंजिला बिल्डिंग में आग लग गई। हादसे में एक परिवार के 5 लोग जिंदा जल गए। मरने वालों में पति-पत्नी और उनकी 3 बेटियां हैं। बिल्डिंग के बेसमेंट और ग्राउंड फ्लोर पर जूता-चप्पल बनाने का कारखाना था। ऊपर के 4 फ्लोर में दो भाइयों का परिवार रहता था। आग बुझाने दमकल की 20 गाड़ियां पहुंचीं। रात 1।30 बजे लखनऊ से एसडीआरएफ के जवान भी रेस्क्यू के लिए पहुंचे। आग पर काबू पाते तक परिवार आग में जल चुका था। बताया जा रहा है कि आग की शुरुआत ग्राउंड फ्लोर पर कारखाने से हुई। आग पूरी बिल्डिंग में फैल गई।

## प्रदेश में दुग्ध उपलब्धता बढ़ाने बेहतर नस्ल के पशु धन किसानों को उपलब्ध कराए जाएं : मुख्यमंत्री

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड और मध्य प्रदेश राज्य सहकारी दुग्ध संघ के मध्य संपादित अनुबंध के बाद की गई कार्रवाई की समत्व भवन में समीक्षा की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने कहा है कि राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की डेयरी क्षेत्र में विशेषज्ञ का लाभ संपूर्ण प्रदेश को समान रूप से मिले यह सुनिश्चित करना आवश्यक है। उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि सहकारी संघों के साथ-साथ निजी डेयरी संचालकों को भी आवश्यक कंसल्टेंसी उपलब्ध कराई जाए। मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव ने कहा कि प्रदेश में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए अन्य राज्यों की बेहतर नस्ल की गाय भैंसों को प्रदेश में लाने और उन्हें किसानों को उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाने की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि प्रदेश में उत्पादित दूध के वैल्यू एडिशन के बाद ही डेयरी

उत्पाद प्रदेश के बाहर जाएं। मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव ने कहा कि प्रदेश में बड़ी गौशालाएं विकसित की जा रही हैं ।इनके विकास और बेहतर प्रबंधन से भी दूध उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि निजी विश्वविद्यालय भी डेयरी टेक्नोलॉजी और एनिमल हसबेंडरी संबंधी कोर्स संचालित करें। बैठक में पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन अपर मुख्य सचिव श्री राजेश राजौरा, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के प्रमुख श्री मिनेश शाह, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री एस रघुपति, महाप्रबंधक श्री संजय गोबानी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश की डॉ. मोहन यादव सरकार प्रदेश के किसानों और दुग्ध उत्पादक किसानों की बेहतरी के लिए लगातार प्रयास कर रही है। जहां किसानों को विभिन्न सहायता निधियां प्रदान की जा रहीं हैं। वहीं दुग्ध उत्पदकों को बेहतर नस्ल के पशु भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

## उज्जैन के महाकाल लोक में भड़की आग, श्रद्धालुओं के बीच अफरा-तफरी

**उज्जैन।** महाकाल लोक परिसर में शंख द्वार के पास हड़कंप मच गया। अचानक एक ट्रांसफॉर्मर में जोरदार धमाके के साथ आग लग गई। कुछ ही पलों में आग ने विकराल रूप ले लिया और पूरा इलाका काले धुएं की मोटी चादर में ढक गया। घटना उस समय हुई जब परिसर में हजारों श्रद्धालु मौजूद थे। गनीमत रही कि कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ।

शंख द्वार के पास स्थित ट्रांसफॉर्मर में अचानक धमाके के साथ चिंगारी निकली और पलक झपकते ही आग की लपटें उठने लगीं। इस दौरान वहां मौजूद सैकड़ों श्रद्धालु जान बचाने को इधर-उधर भागते दिखे। यह वही इलाका है जहां से वीआईपी दर्शन की एंट्री होती है और प्रोटोकॉल ऑफिस भी यहीं मौजूद है।

### फायर ब्रिगेड और बिजली विभाग की देरी भी उजागर

धमाके और आग की सूचना के बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी तो मौके पर पहुंची, लेकिन जब तक आग पर काबू पाया गया, तब तक आधे घंटे तक पूरा परिसर धुएं में घिर चुका था। बिजली विभाग ने आनन-फानन में बिजली सप्लाई बंद की। घटना के बाद कुछ देर के लिए दर्शन व्यवस्था रोक दी गई।

## रेस्टोरेंट में टेबल न मिलने पर तमतमाए मंत्री रात में ही शुरू करवा दी फूड सेफ्टी की जांच

**ग्वालियर।** एक रेस्टोरेंट में टेबल न मिलने से नाराज हुए मध्य प्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने आधी रात को फूड विभाग की टीम बुलाकर रेस्टोरेंट की जांच करवा दी। मामला रविवार रात का है, जब मंत्री एक पारिवारिक कार्यक्रम के बाद खाने के लिए पटेल नगर स्थित क्वालिटी रेस्टोरेंट पहुंचे थे।

**मंत्री को टेबल न मिलने पर जताई नाराजगी-** मंत्री पटेल, विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर के बेटे के रिसेप्शन में भाग लेने ग्वालियर पहुंचे थे। रिसेप्शन के बाद वे अपने परिजनों के साथ खाने के लिए रेस्टोरेंट गए। चूंकि वे पारंपरिक ड्रेस में नहीं थे और होटल में भीड़ अधिक थी, इसलिए स्टाफ उन्हें पहचान

नहीं सका और टेबल के लिए इंतजार करने को कह दिया। इससे मंत्री नाराज हो गए और उन्होंने रेस्टोरेंट की साफ-सफाई पर सवाल उठाते हुए तत्काल फूड सेफ्टी डिपार्टमेंट को मौके पर बुला लिया।

**भोपाल।** तेज आंधी चलते अरेरा कॉलोनी मेट्रो प्लाजा स्थित एक विशाल पीपल का पेड़ गिरने से कई दोपहिया वाहन दब गए। गनीमत रही की उस वक्त पेड़ के नीचे कोई नही खड़ा था।

## मुझे लाल किला दे दीजिए, महिला की मांग पर चीफ जस्टिस ने पूछा, फतेहपुर सीकरी क्यों नहीं?

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक महिला की दायर याचिका को खारिज कर दिया, जिसने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की वंशज होने का दावा किया था और अपनी वंशावली का हवाला देते हुए लाल किले पर कब्जा करने की मांग की थी। सीजेआई संजीव खन्ना और जस्टिस पीवी संजय कुमार की पीठ ने याचिका को पूरी तरह से गलत बताते हुए कहा, केवल लाल किला ही क्यों? फतेहपुर सीकरी क्यों नहीं? उन्हें भी क्यों छोड़ दिया जाए? रिट पूरी तरह से गलत है। खारिज की जाती है। लाल किला 17वीं सदी का मुगलकालीन किला है। यह दिल्ली की सबसे खास ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। यह किला बहादुर शाह जफर द्वितीय के परपोते की विधवा को सौंपने की मांग की जा रही है। चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने सुल्ताना बेगम की याचिका पर सवाल उठाया। चीफ जस्टिस ने हैरानी जताते हुए कहा, क्या आप इस पर बहस करना चाहती हैं?

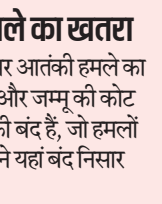

### भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच हाईअलर्ट पर सुरक्षा बल

## पुंछ में आतंकी ठिकाना मिला, 5 आईईडी -वायरलेस सेट बरामद

### पाकिस्तान को चिनाब का पानी देने वाले 2 डैम के गेट बंद

**पहलगाम/नई दिल्ली एजेंसी।** सिक्योरिटी फोर्सेस ने सोमवार को जम्मू-कश्मीर के पुंछ में आतंकी ठिकाना खोजा है। यहां 5 IED, वायरलेस सेट और कुछ कपड़े भी बरामद हुए हैं। पुंछ के सुरनकोट में मारहोट गांव में यह ठिकाना मिला। सुरक्षा बलों का कहना है कि यह आतंकियों के छिपने की जगह है।

इस बरामदगी के बाद श्रीनगर सेंट्रल जेल और जम्मू की कोट बलवाल जेल की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इनमें कई आतंकी बंद हैं, जो हमलों में मदद करते हैं। इंटेलिजेंस अलर्ट के बाद यह कदम उठाया गया है।

जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने चिनाब नदी पर बने बागलिहार और सलाल डैम के गेट बंद कर दिए हैं। इनसे पाकिस्तान को पानी जा रहा था। भारत पहलगाम हमले के बाद सिंधु जल संधि

को रद्द कर चुका है, जिससे पाकिस्तान सरकार परेशान है। NIA ने जम्मू की कोट बिलावल जेल में लश्कर के ओवर ग्राउंड वर्कर्स निसार अहमद और मुश्ताक हुसैन से पूछताछ की। इन दोनों ने 2023 में डांगरी में हुए आतंकी हमले में आतंकियों की मदद की थी। शक है कि पहलगाम अटैक में भी इन्होंने आतंकवादियों की मदद की थी।

### पाकिस्तान ने लगातार 11वें दिन सीजफायर तोड़ा

पाकिस्तान ने लगातार 11वें दिन सीजफायर तोड़ा है। पाकिस्तानी सेना ने 4-5 मई की रात रूष्ट के आसपास कुपवाड़ा, बारामुल्ला, पुंछ, राजौरी, मेंढर, नौशेरा, सुंदरबनी और अखनूर इलाकों में फायरिंग की। भारतीय सेना ने इसका जवाब दिया और हल्के हथियारों से फायरिंग की।

### जम्मू-कश्मीर की जेलों पर आतंकी हमले का खतरा

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर की जेलों पर आतंकी हमले का खतरा है। इंटेलिजेंस अलर्ट के बाद श्रीनगर सेंट्रल जेल और जम्मू की कोट बलवाल जेल की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इनमें कई आतंकी बंद हैं, जो हमलों में मदद करते हैं। पहलगाम हमले की जांच में एनआईए ने यहां बंद निसार और मुश्ताक से पूछताछ की थी।

## भीषण गर्मी में पंछियों को राहत हेतु शहीद बीरबल ढालिया जन कल्याण परिषद ने सकोरे वितरित किए

**भोपाल।** शहर में भीषण गर्मी को ध्यान में रखते हुए पंछियों की सेवा में योग केंद्र ईदगाह हिल्स पर क्षेत्रीय नागरिकों को 50 सकोरे शहीद बीरबल जन कल्याण परिषद संयोजक भगवानदास ढालिया ने कार्यकर्ताओं के साथ भेंट करते हुए पर्यावरण संतुलन के लिए पेड़ पौधों के साथ ही पंछियों की भूमिका भी अहम बताइ इस अवसर पर राकेश कुकरेजा ने शहर वासियों से अपील की है की पंछियों के लिए स्कोरो में पानी भरकर ठंडे स्थान पर आवश्यक रखें इस अवसर पर राजा शर्मा,सुनील सराठे, अजय प्रजापति, नरेंद्र सिंह ठाकुर, राम जीवन मकोरिया, यतेंद्र मकवाना,सुकांति ठाकुरिया, लक्ष्मी महाजन, संदीप कल्याणे, दीपचंद तिवारी, सुनील शुक्रवारे आदि उपस्थित थे।

## हास्य के मतवालों ने किया हास्य योग

**भोपाल।** सुरुचि नगर बाल उद्यान में विश्व हास्य दिवस के उपलक्ष्य में हास्य के मतवाले हास्य योग करते नजर आए और सबको बतया सभी लोगों की एक दवा हास्य योग है सबसे भला। डिप्रेशन के मरीज हास्य योग से पूर्ण रूप से बिना किसी औषधि के स्वस्थ हो जाते हैं इसी तरीके से यदि आपको बलगम है नजला है खांसी है तो यदि आप हास्य योग का उपयोग करते हैं तो आपकी यह रोग दूर हो जाते हैं। हास्य योग से लिवर से संबंधित रोग भी ठीक होते हैं यानी की अनेकों रोगों की एक दवा हास्य योग है सदा भला। इस दौरान कुमुदिनी तोमर ,निलु हर्षे, ए आर चौधरी, वृक्ष मित्र सुनील दुबे आदि मौजूद रहे।

## पति की याद में हर साल सैनिक की पत्नी करवा रही नेत्र रोगी का ऑपरेशन

**संत हिरदाराम नगर।** राजधानी के गुलमोहर क्षेत्र में एलबर्ट एक्का कॉलोनी में अधिकांश पूर्व अथवा दिवंगत सैनिकों के परिवार रहते हैं। इनमें से एक परिवार की गृहणी आशा माथुर (बदला हुआ नाम) हर साल अपने दिवंगत पति की स्मृति में 6 मई को एक नेत्र रोगी की आंख का आपरेशन करने के लिये दान राशि सेवा सदन में भेजती हैं। आशा माथुर कुछ भी हो जाये 6 मई की तिथि पर दानराशि भेजना नहीं भूलती। वो किसी एक नेत्र रोगी मरीज के आपरेशन के लिए सात हजार रूपए का दान देती है। आशा माथुर अब 77 बरस की हैं। उनके परिवार में उनका छोटा पुत्र, एक भाई और पुत्रवधु फौज में ही सेवारत हैं। उनके पति आर्मी एयर डिफेंस में कमीषन्ड अफसर थे। आशा से बात करने में ही इस बात का भान होने लगता है कि उन्हें अपने देश-देशवासियों के प्रति कितना गहरा स्नेह है। उनका यह कहना है कि हाल ही के दिनों में लोगों में सामाजिक आडम्बर काफी बढ़ गया है। जन्मतिथि पर रात्रि भोज और स्मृति दिवस आदि पर भण्डारा आयोजित करने के बजाय गरीब बच्चों की शिक्षा और निर्धन मरीजों के स्वास्थ्य लाभ के कार्यों पर पैसा खर्च करना चाहिये। सामाजिक आडम्बर से किसी भी व्यक्ति या वर्ग का भला नहीं होता है। लोकसेवा के उद्देश्य से दान करने में जो आत्मिक सुख मिलता है, उसकी तुलना अन्य किसी बात से नहीं की जा सकती।

## जनसंपर्क विभाग के अपर संचालक रहे शर्मा के निधन पर श्रद्धांजलि

**भोपाल।** राजधानी मीडिया एवं प्रगतिशील पत्रकार संघ मध्य प्रदेश भोपाल ने जनसम्पर्क विभाग में उपसंचालक रहे नीरज शर्मा के दुखद निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। मीडिया संघ के अध्यक्ष संजीव श्रीवास्तव, महासचिव प्रेम कुशवाह, उपाध्यक्ष रामानंद द्विवेदी, कोषाध्यक्ष नौशाद कुरेशी, वरिष्ठ पदाधिकारी गण सुरेंद्र मिश्रा, राम मोहन रघुवंशी, ठाकुर उदयभानु सिंह, अजय मिश्रा, शिवराज सिंह, शैलेंद्र पाल, विजय नेमा, पंकज शुक्ला, साद सिद्दीकी, इंतखाब लोदी, अमिताभ पांडे,राकेश तिवारी, शरद पाराशर आदि ने शोक संवेदना व्यक्त की है।

## बैरसिया विधानसभा यूथ कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करेंगी पार्षद भाग्यश्री खत्री

**बैरसिया।** जनता की सेवा और कांग्रेस विचारधारा को जीवन का ध्येय मानने वाली बैरसिया नगर पालिका की वरिष्ठ पार्षद श्रीमती भाग्यश्री चंचल खत्री अब युवा नेतृत्व को नई दिशा देने के लिए मैदान में उतर चुकी हैं। वे 6 मई को बैरसिया विधानसभा यूथ कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन दाखिल करेंगी, जिसमें उनके समर्थकों और शुभचिंतकों का जोश देखने लायक रहेगा। शनिवार को पूर्व मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव राजेंद्र मंडलोई के बैरसिया आगमन पर स्थायी विश्राम गृह में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ बैठक आयोजित हुई। बैठक में आगामी युवा कांग्रेस चुनावों की रूपरेखा, नामांकन प्रक्रिया और मतदान प्रणाली पर विस्तार से चर्चा हुई। श्री मंडलोई ने बताया कि 6 मई को नामांकन दाखिल होंगे और 11 मई को मतदान संपन्न होगा। इसी कड़ी में कांग्रेस पार्टी की कर्मठ, जुझारू और समर्पित नेता श्रीमती भाग्यश्री चंचल खत्री ने अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन दाखिल करने का निर्णय लिया है। भाग्यश्री खत्री न केवल एक राजनेता हैं, बल्कि एक ऐसी सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं, जिन्होंने जनसेवा को अपनी प्राथमिकता बनाकर हजारों दिलों में अपनी जगह बनाई है। वार्ड क्रमांक 13 से लगातार 15 वर्षों से पार्षद पद पर रहते हुए उन्होंने विकास की ऐसी मिसाल कायम की है, जो आज हर वार्डवासी गर्व से बताता है। उनके कार्यकाल में वार्ड में सड़कें, पेयजल व्यवस्था, स्वच्छता और सामुदायिक सुविधाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ। लेकिन जो बात उन्हें सबसे अलग बनाती है, वह है उनकी संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टिकोण।

### रोग निवारण एवं प्रशिक्षण शविर का आयोजन

# बीमारियों का मुख्य कारण है शरीर में गंदगी का जमा होना: डॉ. टेवानी

**संत हिरदाराम नगर।** आरोग्य केन्द्र द्वारा आयोजित रोग निवारण एवं प्रशिक्षण मासिक शिविर के अन्तर्गत शिविर का शुभारंभ किया गया। इस शिविर में विभिन्न स्थानों से कई साधक लाभान्वित होने की उम्मीद से आए हैं। यहां शिविरार्थियों को प्राकृतिक उपचार, योग, उपवास एवं अपक्व आहार, रसाहार, फलाहार के माध्यम से स्वस्थ रहने की कला सिखाई जाएगी। शिविर का व्याख्यान मेडीकल डायरेक्टर डॉ. गुलाब राय टेवानी द्वारा दिया गया। डॉ. गुलाब राय टेवानी ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अपक्व आहार लेंगे तो दवाईयां भी कम होगी। अगर बीमारी से पूर्णत: निजात पाना है तो प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाना होगा। हमारा आहार ही हमारी औषधि हैं, इसलिए आहार ऐसा हो जो सुपाच्य, स्वादिष्ट, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक हो। पक्व आहार से जीवित तो रह सकते है, लेकिन स्वस्थ नहीं हो सकते हैं। गलत आहार से बीमार होते है। सही आहार लेकर स्वस्थ हो सकते है।

बीमारियों का मुख्य कारण है शरीर में गंदगी का जमा होना और बीमारियों से निजात पाने के लिए एनिमा, उपवास व अपक्वाहार का विशेष महत्व है। जो प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा संभव है। प्राकृतिक चिकित्सा में प्राकृतिक भोजन, प्राकृतिक उपचार एवं योग से शरीर का शुद्विकरण करते हैं। यहाँ पर आपको मानसिक, शारीरिक व डिजिटल डिटॉक्स कराया जाएगा। डिजिटल डिटॉक्स जैसे मोबाइल, लेपटॉप आदि से परहेज करके स्वास्थ्य लाभ पा सकेंगे एवं स्वंय को स्वस्थ व तंदुरूस्त महसूस करेंगे।

## सदैव प्रयत्नशील रहें

**असफल बन जाओ कोई बात नहीं लेकिन अप्रयत्नशील कभी मत बनो। असफल व्यक्ति के जीवन में सफल होने के शत प्रतिशत अवसर होते हैं, जब तक वो प्रयत्नशील बना रहे। असफल होकर हाथ खड़े कर देने का अर्थ है, कि युद्ध से पहले ही हार स्वीकार कर लेना। सम्मानीय एवं पूजनीय आपकी सफलता नहीं अपितु आपका संघर्ष, आपका प्रयत्न होता है। सफल लोग कुछ नया नहीं करते अपितु प्रयत्नशील लोग जरूर एक न एक दिन कुछ नया करने की क्षमता रखते हैं। असफलता जब भी आयेगी अपने महत्वपूर्ण अनुभव जरूर दे कर जायेगी। आपका आत्मबल सदैव बना रहना चाहिए। आपकी हिम्मत कभी कमजोर नहीं पड़नी चाहिए। निरंतर प्रयत्नशील बने रहें, सफलता मिले न मिले लेकिन सम्मान जरूर मिलेगा। कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताले को खोल देती है उसी तरह निरंतर प्रयासरत बने रहें एक न एक दिन आपके परिश्रम की चाबी सफलता के ताले को अवश्य खोल कर रख देगी।**

# भगवान झूलेलाल ने अत्याचार से मुक्ति दिलाई और सनातन से जोड़ा: रवींद्र जोशी

**संत हिरदाराम नगर।** संत नगर में पहली बार चल रही चार दिवसीय भगवान झूलेलाल की श्री अमर कथा में बाटवा गुजरात से आए कथा वाचक रवींद्र जोशी शास्त्री ने श्रद्वालुओं को भगवान झूलेलाल के अवतार के बारें में बताया। उन्होंने कहा कि वरूण अवतार के रूप में भगवान झूलेलाल ने हजारों लोगों को अत्याचार से मुक्ति दिलाई और सनातन से जोड़ा। विभाजन के समय सिंधी समाज ने धर्म के खातिर जुल्म सहे, अपनी सम्पति का त्याग कर दिया पर धर्म परिवर्तन नहीं किया। यही कारण है कि सिंधी समाज कट्टर सनातनी माना जाता है। वरुण अवतार भगवान झूलेलाल के ग्रंथ श्री अमर कथा का भव्य आयोजन 6 मई तक चलेगा। ठकुर आसानलाल धर्मशाला में प्रतिदिन शाम 5 से रात्रि 8 बजे तक कथा चल रही है। इसके बाद प्रसाद वितरण का कार्यक्रम किया जा रहा है। भगवान झूलेलाल के गादीनशीन सूर्यवंशी 1008 ठकुर साईं आसानलाल साहब के 114वें जन्म जयंती को उपलक्ष्य में श्री अमर कथा का आयोजन चल रहा है। श्री अमर कथा का आयोजन भरूच धाम के वर्तमान गादेशवर ठकुर साईं मनीषलाल साहिब के सानिध्य में हो रहा है जहां पर बड़ी संख्या में श्रद्वालु पहुंचकर कथा का श्रवण कर रहे हैं।

# भगवान चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव पर किया महाआरती का आयोजन

भोपाल। भगवान चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव पर चित्रगुप्त नगर कोटरा में स्थित मंदिर में महाआरती का आयोजन किया गया, आरती में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व दक्षिण-पश्चिम विधानसभा के लोकप्रिय विधायक भगवानदास सबनानी सम्मिलित हुए। मां इरावती चित्रगुप्त सांस्कृतिक एवं सामाजिक न्याय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कायस्थ समाज के सामाजिक बंधु उपस्थित रहे। इस अवसर पर सबनानी ने कहा कि आज के इस शुभ अवसर पर में सभी कायस्थ समाज के सामाजिक बंधुओ के साथ ही सभी प्रदेशवासियों को शुभकामना देता हूं,और भगवान श्री चित्रगुप्त के चरणों में नमन करते हुए सभी की सुख शांति की कामना करता हूं, हमें बचपन से बताया गया है कि मनुष्य अपने कर्मों से ही श्रेष्ठ बनता है, वर्तमान समय में भी लोग अपने काम की वजह से ही पहचान बनाते हैं और समाज में उनका काम ही उन्हें सम्मान दिलाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने काम के प्रति निष्ठावान होना चाहिए और समर्पित भाव से अपने काम को करना चाहिए, मैं पुन: सभी को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। इस अवसर पर राजेश वर्मा ओपी श्रीवास्तव पंकज कुलश्रेष्ठ सहित बड़ी संख्या में सामाजिक बंधु उपस्थित रहे।

**भोपाल। नीलबड़ चौराहे पर लव जिहाद के विरोध में गत दिवस प्रदर्शन किया गया। इसमें भारी संख्या में लोगों ने शामिल होकर आरोपियों पर कार्रवाई की मांग की।**

## जेके हॉस्पिटल में एड्स पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

**भोपाल।** सोमवार को कोलार रोड स्थित जे.के. हॉस्पिटल के प्रथम तल स्थित सीएमई हॉल में एआरटी सेंटर द्वारा एचआईवी/एड्स जागरूकता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस ज्ञानवर्धक सत्र में चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों ने एचआईवी संक्रमण, उससे जुड़ी सामाजिक-स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं, कानूनी प्रावधानों और आधुनिक उपचार पद्धतियों पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. सुधीर कौशल, एसएमओ और नोडल मेडिकल ऑफिसर, एआरटी सेंटर द्वारा परिचय सत्र से की गई। उन्होंने कहा कि एचआईवी अब लाइलाज नहीं बल्कि जागरूकता, समय पर जांच और नियमित उपचार से नियंत्रित की जा सकती है इसके बाद रश्मि शेषु ने एचआईवी संक्रमण पर जागरूकता विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने समाज में फैली भ्रांतियों और भेदभाव को दूर करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि एचआईवी संक्रमित व्यक्ति भी सामान्य जीवन जी सकता है, जरूरत है तो समझ और सहानुभूति की।

# अस्थमा में योगासन प्राणायाम, षटकर्म और ध्यान से कई लाभ: योग गुरु महेश अग्रवाल

**भोपाल।** आदर्श योग आध्यात्मिक केंद्र स्वर्ण जयंती पार्क कोलार रोड़ भोपाल के योग गुरु महेश अग्रवाल ने विश्व अस्थमा दिवस के बारे मे बताते हुए कहा कि व्यक्ति शुभ चिंतन उपवास गहरी नींद एवं नियमित योग उचित खान पान एवं प्रदूषण से दुरी रखते हुए आजीवन स्वस्थ रह सकता हैं। योग के माध्यम से अस्थमा के उपचार के चार समूह हैं। योगासन , प्राणायाम , षट्कर्म और ध्यान, किंतु ध्यान रहे कि अपना मेडिकल उपचार ना रोकें। दमा , श्वास संबंधी रोग अस्थमा मे शीर्षासन समूह, सूर्य नमस्कार , सर्वांगासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, वीरासन, उष्ट्रासन, सुप्त वज्रासन , पश्चिमोत्तानासन, नाड़ी-शोधन प्राणायाम, सूर्यभेदन प्राणायाम, उड्डियान बंध, योग निद्रा का अभ्यास नियमित करने से लाभ मिलता है। प्राकृतिक चिकित्सा में छाती व पीठ पर धूप स्नान, छाती की सूती - ऊनी लपेट, एनिमा उपवास, गरम हाथ पैर स्नान, तेज गति के व्यायाम व स्टीम बाथ, आंवला, नींबू, संतरा अन्नानास मोसम्बी अदरक शहद, मुनक्का लहसुन अंजीर के सेवन एवं घी तेल चिकनाई मांस मछली अंडे अशुभ चिंतन से परहेज योग गुरु अग्रवाल नें बताया कि योग आसन शरीर को लचीला बनाते हैं और जीवन से भर देते हैं । प्राणायाम श्वास व्यायाम नहीं है, बल्कि शरीर में प्राण पैदा और परिसंचालित करने की एक विधि है। अस्थमा के दृष्टिकोण से, शायद यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है योग का। अस्थमा में बुनियादी अंतर्निहित समस्या फेफड़ों की सूजन है, और प्राणायाम से फेफड़ों में सूजन कम हो जाती है। षट्कर्म की नेती क्रिया के अभ्यास में नाक से और कुंजल क्रिया के अभ्यास में पेट से बलगम को निकालने में मदद मिलती। शरीर से बलगम निकल देने से फेफड़ों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। ध्यान व्यक्ति के मानसिक पक्ष के साथ-साथ भावनात्मक पक्ष को प्रभावित करता है। योग हमारी जागरूकता बढ़ाता है, कारण और प्रभाव में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे आपकी जागरूकता बढ़ती है आप देख सकते हैं कि अस्थमा का कारण क्या है।योग गुरु अग्रवाल ने बताया कि अस्थमा फेफड़ों की एक पुरानी बीमारी है, जिसके कारण सांस लेने में समस्या होती है। अस्थमा के लक्षणों में सांस फूलना , खांसी, घरघराहट, छाती में जकड़न, थकान महसूस करना, नींद न आना, सीने में दर्द, एलर्जी, कॉमन कोल्ड आदि मुख्य रूप से शामिल हैं। ये लक्षण हर किसी में उसकी गंभीरता के आधार पर अलग-अलग होते हैं। जब लक्षण नियंत्रण में नहीं होते हैं, तो वायुमार्ग में सूजन या संकुचन आ जाता है, जिससे सांस लेना मुश्किल हो सकता है। अस्थमा को ठीक नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसके लक्षणों को कंट्रोल करके अस्थमा से पीड़ित लोगों की जिंदगी आसान बनाई जा सकती है। विश्व अस्थमा दिवस प्रतिवर्ष मई महीने के पहले मंगलवार को पूरे विश?व में मनाया जाता है। वर्तमान में वायु प्रदूषण को देखते हुए अस्थमा के रोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। इस बीमारी से छोटे बच्चों से लेकर वयोवृध्द जन तक प्रभावित हो रहे हैं अस्थमा विरोध की जागरूकता एवं शिक्षा हेतु इस इस दिन को संपूर्ण विश्व में मनाया जाता है।

## दादाजी धाम मंदिर में जगतगुरु आदि शंकराचार्य का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया

**भोपाल।** दादाजी धाम मंदिर रायसेन रोड पटेल नगर में इस वर्ष भी आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव गर्भगृह की परिक्रमा में स्थापित उनकी प्रतिमा का अभिषेक, पूजन, हवन, आरती कर मनाया गया। इस कार्यक्रम में दादाजी गुरुदेव ट्रस्ट के अध्यक्ष, ट्रस्टी एवं भक्त उपस्थित हुए। सभी भक्तों ने प्रसाद ग्रहण कर पूजन में शामिल होकर पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस दौरान बताया गया कि इस अवसर पर मंदिर के पट भगवान के दर्शन के लिए खुले रहे। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए लगभग 1800 वर्ष पहले भारत के चारों कोनों में द्वारका, श्रृंगेरी, गोवर्धन (पुरी), और बद्रीनाथ चार मठों की स्थापना की थी इन्होंने 100 से अधिक ग्रंथों की रचना की थी और पूरे भारत में अद्वैत वेदांत का प्रचार किया।

# नए कानूनों से न्यायालयीन प्रणाली और लोकतंत्र हुआ है समृद्ध: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

## राज्य सरकार सभी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रही है आगे : जस्टिस सूर्य कांत

## करूणा, विवेक और न्याय से भव्य भवन की आत्मा होगी जागृतः जस्टिस माहेश्वरी

## लंबित प्रकरणों के निराकरण के लिए जजों की नियुक्ति आवश्यकः मुख्य न्यायाधीश कैत

### मुख्यमंत्री ने सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्तियों के साथ रीवा में किया न्यायालय भवन का लोकार्पण

सांध्य प्रकाश संवाददाता ● भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि न्याय पाना देश के हर नागरिक का कानूनी अधिकार है। वादी को समय पर न्याय दिलाना ही सम्पूर्ण न्याय प्रणाली का एकमात्र लक्ष्य है। न्याय पाने के अधिकार की सुरक्षा करते हुए हमारी सरकार प्रदेश के हर नागरिक को सहज और सुलभ न्याय उपलब्ध कराने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समय पर न्याय दिलाना एक समाजिक सूत्र है, जिसे हम सभी को अपने-अपने दायरे में पूरी शिद्दत से निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि रियासत काल से ही रीवा क्षेत्र न्याय व्यवस्था की दृष्टि से हमेशा अग्रणी रहा है। इस दिशा में रीवा में आज एक और नए युग का सूत्रपात हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को रीवा में नवनिर्मित जिला न्यायालय कॉम्पलेक्स के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस नवनिर्मित भवन को न्याय का मंदिर बताते हुए विश्वास जताया कि इस भवन में आने वाला हर व्यक्ति सहज, सुलभ और पूर्ण न्याय प्राप्त करेगा। उन्होंने कहा कि सच्चे अर्थों में सम्राट विक्रमादित्य ने ही देश में एक सशक्त न्याय प्रणाली की आधारशिला रखी थी और आज भी उनकी वही समृद्ध परम्परा निर्बाध गति से प्रवाहमान है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पिछले डेढ़-दो सालों में ही न्यायालयीन व्यवस्था की बेहतरी के लिए प्रदेश में 30 से अधिक छोटे-बड़े न्यायालय भवनों का लोकार्पण किया गया है और यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार न्याय पाने के इच्छुक हर व्यक्ति के लिए जिला न्यायालय में एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने तेजी से आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न्यायिक प्रणाली को अधिक कारगर बनाने के लिए नये कानून बनाए। उन्होंने उच्चतम न्यायालय द्वारा बीते कुछ सालों में दिए गए प्रमुख निर्णयों का जिक्र करते हुए कहा कि इन निर्णयों से सबके दिलों में देश की न्याय व्यवस्था के प्रति श्रद्धा और बढ़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश की न्यायपालिका ने एक अहम निर्णय लेते हुए अब न्याय की देवी की काली पट्टी खोल दी है, ताकि न्याय की देवी खुली आंखों से सबको न्याय दे सके, यह एक अभूतपूर्व पहल है।

न्यायशीलता और न्यायप्रणाली के प्रति अगाध श्रद्धा हम भारतीयों की पहचान है। खुद के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों की संरक्षा भी संस्कृति है। इस संस्कृति को हम सबको मिलकर और आगे लेकर जाना है। उन्होंने सर्वसुविधायुक्त नये न्यायालय भवन के लिए रीवावासियों को बधाई देते हुए कहा कि सबके अधिकारों और हितों की रक्षा में यह भवन न्याय के प्रति आस्था का केंद्र बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रीवा में न्याय की गौरवशाली परंपरा रही है। भगवान श्रीराम ने अपने वनवास के 11 वर्ष रीवा राज्य के चित्रकूट में बिताकर इस धरती को धन्य किया है। उनकी प्रेरणा से ही राम राज्य की परिकल्पना को साकार करने का बल मिला है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश सूर्य कांत ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार सभी क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रही है। सरकार के सक्रिय सहयोग से 30 नवीन न्यायालय भवनों की सौगात मिली है। रीवा के नवीन न्यायालय भवन में न्यायालयीन प्रणाली से जुड़ी सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इससे आगामी 50 वर्षों की आवश्यकताएं पूरी हो जाएंगी। नवीन भवन में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो और कारगर न्यायप्रणाली से निष्पक्ष न्याय मिले। देश की प्रगति के लिए मजबूत न्याय प्रणाली का होना आवश्यक है।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जे.के. माहेश्वरी ने कहा कि रीवा में राजा विश्वनाथ सिंह ने वर्षों पहले दो न्यायालयों का गठन किया था। मेताक्षरा न्यायालय में हिन्दू धर्म की परंपराओं के अनुसार तथा धर्मसभा में धार्मिक आधार पर न्याय किया जाता था। नवीन न्यायालय भवन बघेली स्थापत्य और आधुनिकता का अनूठा संगम है। इस भवन में जब करूणा, विवेक और न्याय होगा तभी इसकी आत्मा जागृत होगी।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश सतीश चन्द्र शर्मा ने कहा कि रीवा में विधि का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है। इसी माटी से निकलकर जी.पी. सिंह हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश तथा जस्टिस जे.एस. वर्मा सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने। यहाँ के कई जज और अधिवक्ता हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपनी प्रतिभा की चमक बिखेर रहे हैं।

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सुरेश कुमार कैत ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के प्रयासों से प्रदेश को 30 नये भवन मिले हैं। रीवा के भव्य न्यायालय भवन में 40 कोर्ट और 750 वकीलों के बैठने की व्यवस्था है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट में प्रकरण अधिक हैं लेकिन जजों की संख्या कम है। प्रकरणों के निराकरण के लिए हाईकोर्ट में 32 नये जजों की नियुक्ति की जाना आवश्यक है।

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा के लिए नवीन जिला न्यायालय भवन की सौगात खुशी और गौरव लेकर आई है। रीवा ही नहीं पूरा विन्ध्य तेजी से विकास कर रहा है। यहाँ 40 मिलियन टन सीमेंट और 15 हजार मेगावाट बिजली के उत्पादन सहित अत्यधिक मात्रा में कोयले का भी उत्पादन होता है। विन्ध्य में रेलवे लाइन, फोरलेन सड़कों और एयरपोर्ट निर्माण के साथ हर क्षेत्र में विकास में तेजी आई है। न्यायालय के नवीन भवन के लोकार्पण में मुख्यमंत्री और न्यायाधीशगणों ने शामिल होकर हमारा गौरव बढ़ा दिया है। हमारी न्याय प्रणाली सुदृढ़ होगी तो हमारा लोकतंत्र भी मजबूत बनेगा।

समारोह में हाईकोर्ट के पोर्टफोलियो जज संजीव सचदेवा ने कहा कि रीवा की न्यायिक प्रणाली देश के संविधान से भी पुरानी है। यहाँ राजशाही विन्ध्य प्रदेश के समय भी मजबूत न्याय व्यवस्था थी। रीवा हाईकोर्ट से बघेलखण्ड और बुंदेलखण्ड के 21 जिलों के प्रकरणों का निराकरण होता था। नवीन न्यायालय भवन से रीवा की न्यायालयीन परंपरा को नया आयाम मिलेगा।

स्वागत उद्बोधन हाईकोर्ट के न्यायाधीश संजय द्विवेदी ने दिया। समारोह में हाईकोर्ट के न्यायाधीश विशाल मिश्रा, एडवोकेट जनरल प्रशांत सिंह, प्रमुख सचिव न्याय विभाग एन.पी. सिंह, सांसद जनार्दन मिश्र, विधायक सिरमौर दिव्यराज सिंह, विधायक मनगवां इंजीनियर नरेन्द्र प्रजापति, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल उपस्थित रहीं। समारोह में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राकेश मोहन प्रधान ने स्मृति चिन्ह भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। कमिश्नर बी.एस. जामोद, आईजी गौरव राजपूत, कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, स्टेट बार काउंसिल के सदस्य अखण्ड प्रताप सिंह, जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेश पाण्डेय, नरेन्द्र सिंह बघेल, लक्ष्मीनारायण मिश्रा, शिवेन्द्र उपाध्याय, सुशील तिवारी, घनश्याम सिंह तथा बड़ी संख्या में अधिवक्ता उपस्थित रहे।

# रीवा में बर्न यूनिट में प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा का मिल रहा लाभ

### उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेश के तीसरे स्किन बैंक का किया शुभारंभ

**भोपाल।** उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा में गंभीर रूप से जल जाने से पीड़ित मरीजों के लिए बर्न यूनिट में प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा का लाभ मिल रहा है। रीवा में अन्य जिलों के मरीज भी इसका लाभ प्राप्त कर रहे हैं। कुशल चिकित्सकों द्वारा अत्याधुनिक मशीनों के माध्यम से मरीजों का उपचार कर उन्हें प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। अब रीवा में प्रदेश के तीसरे स्किन बैंक का शुभारंभ हो रहा है। जिसका लाभ भी मरीजों को मिलेगा।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जल जाने के कारण दर्दनाक स्थिति में मरीज इलाज के लिए गंभीर हालत में रीवा आते थे। अब उन्हें प्लास्टिक सर्जरी के साथ ही ड्रॉफ्टिंग का उपचार भी मिल सकेगा। श्री शुक्ल ने कहा कि प्लास्टिक सर्जरी के लिए मरीज पहले महानगरों या विदेश में उपचार के लिए जाते थे। अब रीवा के संजय गांधी अस्पताल में कुशल एमसीएच प्लास्टिक सर्जन अत्याधुनिक मशीनों से प्लास्टिक सर्जरी कर रहे हैं। अब इसके साथ ड्राफ्टिंग का भी उपचार होने लगेगा। श्री शुक्ल ने कहा कि जबलपुर और भोपाल के बाद रीवा में तीसरा स्किन बैंक प्रारंभ हो रहा है। रीवा को मेडिकल हब बनाने के लिए सभी प्रयास जारी हैं। ऑर्गन ट्रांसप्लांट की सुविधा भी मिलने लगेगी। सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है कि ऑर्गन डोनेशन करने वालों का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा तथा उनके परिजनों को स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस में सम्मानित भी किया जाएगा। गंभीर रोगों के इलाज के लिए सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में उपचार की सुविधा विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा दी जा रही है। संजय गांधी अस्पताल व जिला चिकित्सालय में भी रोगियों के लिए उपचार की समुचित व्यवस्था कराई जा रही है।

## भगवान चित्रगुप्त प्रकटोत्सव समारोह में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री

**भोपाल।** उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि कायस्थ समाज बुद्धजीवी समाज के तौर पर अपनी पहचान रखता है। इस समाज के लोग पढ़े-लिखे और संस्कारित होते हैं। जो समाज को दिशा देने का कार्य करते हैं। श्री शुक्ल चित्रांश परिवार द्वारा रीवा में आयोजित भगवान चित्रगुप्त प्रकटोत्सव समारोह को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। मानस भवन में आयोजित कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि चित्रांश परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिवर्ष आने का अवसर मिलता है। इस प्रकार के आयोजन समाज को दिशा देने और सशक्त करने का माध्यम होते हैं। उन्होंने कहा कि रीवा का विकास सभी के सहयोग से ही संभव हो रहा है। श्री शुक्ल ने कायस्थ समाज द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया तथा वरिष्ठ नागरिक का सम्मान किया।

## योग गुरु पद्मश्री शिवानंद बाबा के निधन पर उप मुख्यमंत्री ने व्यक्त किया गहन शोक

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने काशी के प्रख्यात योग गुरु पद्मश्री शिवानंद बाबा के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पद्मश्री शिवानंद बाबा जी के निधन का समाचार अत्यंत दु:खद है। उन्होंने योग, संयम और सेवा के माध्यम से मानवता को नई दिशा दी। उनका तपस्वी जीवन समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि बाबा जी का योगदान न केवल आध्यात्मिक जगत में अमूल्य रहा है, बल्कि उन्होंने विश्व पटल पर भारतीय योग परंपरा को गौरव दिलाया। उनका संपूर्ण जीवन सादगी, सेवा और साधना का प्रतीक रहा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त अनुयायियों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना की है।

# नीमच, देवास, सिवनी एवं शिवपुरी में परमाणु परियोजनाओं की स्थापना में सहयोग के लिए समिति गठित

**भोपाल।** राज्य शासन ने एनटीपीसी द्वारा प्रदेश में परमाणु परियोजनाओं की स्थापना के लिए नीचम, देवास, सिवनी एवं शिवपुरी जिलों में चिन्हित 4 स्थलों पर परमाणु परियोजनाओं की स्थापना में सहयोग प्रदान करने के लिए अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मण्डलोई की अध्यक्षता में ज्वाइंट वर्किंग कमेटी का गठन किया है। समिति में अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/ सचिव जल संसाधन, पर्यावरण, राजस्व, वन और कलेक्टर नीमच, देवास, सिवनी, शिवपुरी, कार्यपालक निदेशक परमाणु एनटीपीसी मुम्बई तथा श्री ए.पी. सनल महाप्रबंधक परमाणु एनटीपीसी मुम्बई को सदस्य नियुक्त किया गया है। श्री संदेश जायसवाल महाप्रबंधक परमाणु एनटीपीसी भोपाल समिति के संयोजक होंगे। समिति द्वारा भू-अधिग्रहण के पूर्व परियोजना अध्ययन में स्थानीय प्रशासन को मार्गदर्शन दिया। समिति द्वारा प्रस्तावित स्थलों के परिप्रेक्ष्य में भूमि अधिग्रहण/क्रय आदि में एनटीपीसी समिति द्वारा जल उपलब्धता एवं आवंटन के लिये समन्वय किया जायेगा। समिति द्वारा समस्त वैधानिक स्वीकृतियाँ जिनमें वन भूमि यदि कोई हो, के लिये समन्वय किया जायेगा। समिति द्वारा प्रस्तावित परियोजना से विद्युत की निकासी के लिए आवश्यक भूमि तथा अधोसंरचना के विकास में समन्वय किया जायेगा। समिति द्वारा परियोजना के क्रियान्वयन के लिये आवश्यकता पड़ने पर विभिन्न वैकल्पिक स्वीकृतियों तथा सार्वजनिक सुनवाई, भूमि अधिग्रहण, वन स्वीकृतियाँ, पर्यावरणीय स्वीकृति राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल से स्वीकृति के लिये समन्वय किया जायेगा।

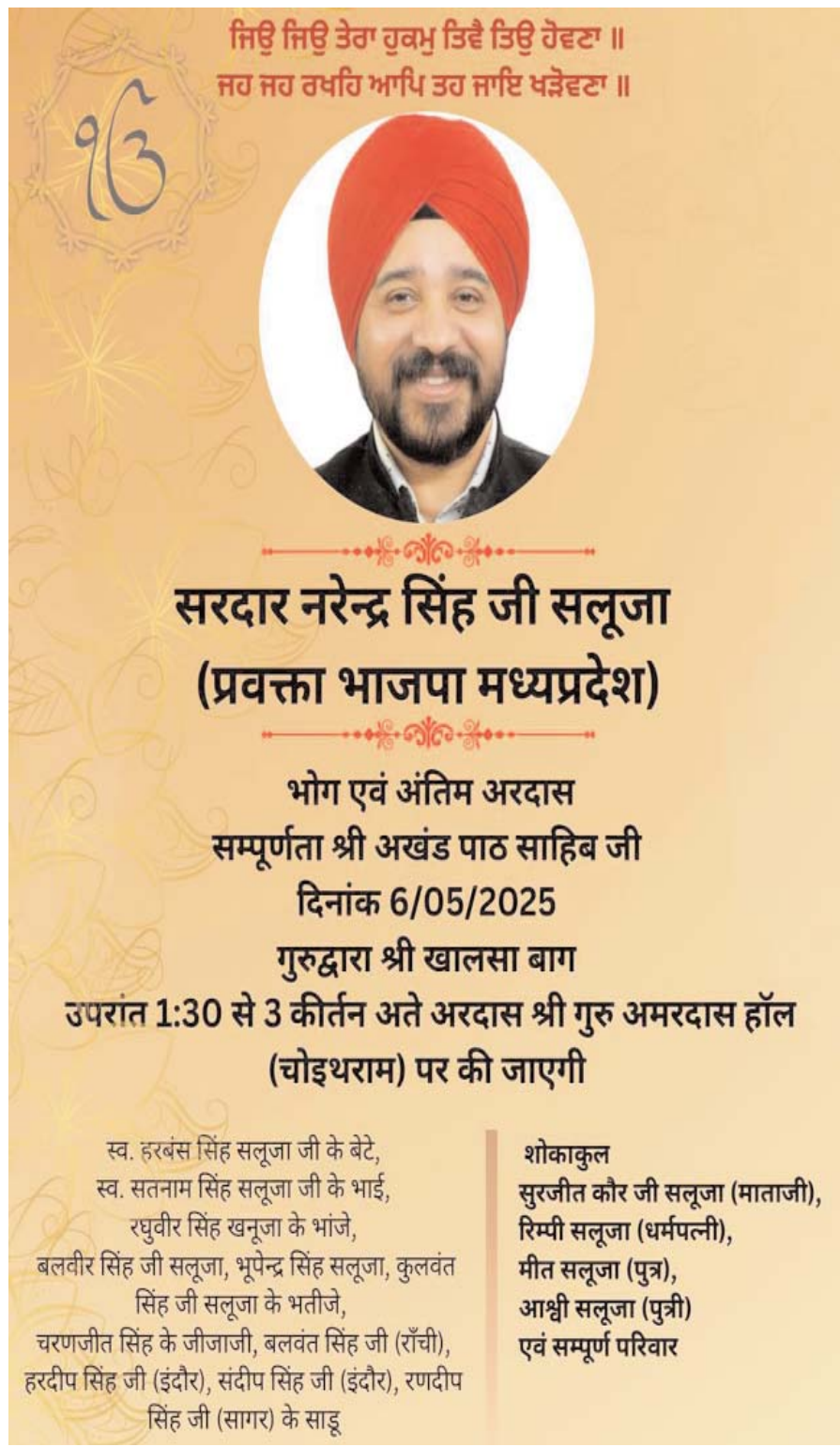


# नगरीय विकास मंत्री ने भवनों की सुरक्षा के लिए निकाय अधिकारियों को दिए निर्देश

## भवन स्वामी 31 दिसम्बर के पूर्व फायर प्लॉन प्रस्तुत करें

**भोपाल।** नगरीय विकास एवं आवास मंत्री विजयवर्गीय ने प्रदेश में निश्चित ऊँचाई से बड़े भवनों में अग्नि दुर्घटना से बचाव के इंतजामों का निरीक्षण करने और नियमों की अनदेखी करने वाले भवनों को चिन्हित करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से इस कार्य को प्राथमिकता दिये जाने के लिये कहा है।

प्रदेश में फायर सेफ्टी प्रमाण-पत्र प्राप्त किये जाने के संबंध में नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने दिशा-निर्देश जारी किये हैं। जारी निर्देश के अनुसार भवन स्वामी अब 31 दिसम्बर, 2025 तक फायर प्लॉन प्रस्तुत कर संबंधित अग्निशमन प्राधिकारी से अनुमोदन प्राप्त कर सकेंगे। नियत तिथि के बाद फायर प्लॉन प्रस्तुत नहीं करने वाले भवन स्वामियों के विरुद्ध दण्ड के अधिरोपण की कार्रवाई नियत नियम के अनुसार की जायेगी। निर्देशों में कहा गया है कि फायर सेफ्टी प्लॉन के कण्डिका क्रमांक-2 में उल्लेखित भवन, जो कि पूर्व से निर्मित हैं, उन्हें 2 माह के भीतर एनबीसी से निर्धारित मानक अनुसार फायर प्लॉन तैयार कर अनुमोदन के लिये अग्निशमन प्राधिकारी को प्रस्तुत करना होगा। निर्देश में यह भी बताया गया है कि अग्निशमन अधिकारी द्वारा आवेदन प्राप्ति के एक माह के भीतर फायर प्लॉन का अनुमोदन किया जायेगा। कण्डिका में यह भी स्पष्ट किया गया है कि 2 माह की समयावधि के भीतर यदि भवन स्वामी फायर प्लॉन तैयार कर अग्निशमन प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत नहीं करता है, तो विलंब शुल्क के साथ 500 रुपये प्रतिदिन की दर से और एक वर्ष के बाद एक हजार रुपये प्रतिदिन की दर पर दण्ड शुल्क देय होगा। राज्य शासन ने नगर निगमों के लिये आयुक्त नगरपालिक निगम, नगरपालिका परिषद और नगर परिषद के लिये संभागीय संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग, ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले प्रकरणों के लिये जिला कलेक्टर और छावनी परिषद क्षेत्र जबलपुर, महू, मुरार, पचमढ़ी और सागर के लिये अधिशासी अधिकारी को अग्निशमन प्राधिकारी घोषित किया है। नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा जिन भवनों के लिये फायर सेफ्टी प्लॉन के प्रमाण-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य किया गया है, उनमें 15 मीटर से ऊँचे समस्त भवन, एक तल पर 500 रू2 से अधिक निर्मित क्षेत्रफल वाले समस्त भवन (आवासीय एवं धार्मिक और सामुदायिक भवनों को छोड़कर) शामिल किये गये हैं। कोई भी होटल और अस्पताल, जिसमें 50 से अधिक पलंग और बिस्तर हों, उन्हें भी शामिल किया गया है। नियमों में 50 से कम पलंग वाले होटल, 50 बिस्तरीय अस्पताल पंजीकृत फायर इंजीनियर का प्रमाणीकरण प्रस्तुत करेंगे। फायर सेफ्टी प्लॉन के संबंध में दिशा-निर्देश संबंधित क्षेत्र के नगरीय निकायों के कार्यालयों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

संपादकीय

## लिहाजा जातियों का नया संकलन तैयार होगा

पहलगाम नरसंहार के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध जैसा तनाव पसरा है, लेकिन मोदी सरकार ने अचानक जाति जनगणना की घोषणा कर सभी को चौंका दिया। यह निर्णय कैबिनेट की राजनीतिक मामलों की समिति में लिया गया। उसे 'सुपर कैबिनेट' करार दिया जाता है, क्योंकि उसकी बैठक कभी-कभार ही होती है। बहरहाल इस बार जब भी जनगणना होगी, तब सरकार घर-घर जाकर 'जाति' भी पूछेगी, लिहाजा जातियों का नया संकलन तैयार होगा। देश की आजादी के बाद पहली बार जाति जनगणना कराई जाएगी। 1931 में अंतिम जाति जनगणना कराई गई थी। आजादी के बाद 1951 और '61 में जनगणना तो कराई गई, लेकिन अनुसूचित जाति और जनजाति का ही डेटा सार्वजनिक किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का मानना था कि इससे जातीय विभाजन के हालात पैदा हो सकते हैं, नतीजतन राष्ट्रीय एकता प्रभावित हो सकती है। नेहरू सरकार ने जो 'जनगणना अधिनियम' बनाया था, उसमें भी जाति जनगणना का उल्लेख नहीं था। उसके बाद प्रधानमंत्री के तौर पर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने 'जाति' के मुद्दे पर पुरजोर विरोध किया। उस दौर में कांग्रेस का राजनीतिक और चुनावी नारा होता था-'जात पर न पात पर, मुहर लगेगी 'हाथ' पर।' प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने तो ओबीसी के खिलाफ दो घंटे से अधिक समय का भाषण दिया था। बहरहाल अब बुनियादी मुद्दा और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का सवाल यह है कि जनगणना कब कराई जाएगी और जाति जनगणना का प्रारूप क्या होगा? दरअसल 1881 में ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की पहली बार जनगणना कराई गई थी। उसके हर 10 साल के बाद यह क्रम जारी रहा। 1941 में भी जनगणना में जातीय गणना भी की गई, लेकिन उसका डाटा सार्वजनिक नहीं किया गया। केंद्र में कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए-2 सरकार के दौरान 2011 में जनगणना का एक हिस्सा ही पूरा किया गया। करीब 25 करोड़ शहरी और ग्रामीण परिवारों का सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना का सर्वे किया गया। 2012 के अंत तक डाटा मिला। 2013 तक प्रोसेसिंग नहीं हो पाई। 2014 में मोदी सरकार बनी। ग्रामीण भारत का डाटा तो जारी किया गया, लेकिन जाति को फिर छिपा कर रखा गया। अंततः 2018 में सरकार ने कहा कि डेटा में गलतियां हैं। फिर सर्वोच्च अदालत में भी यही बात कही। क्रम से 2021 में जनगणना होनी चाहिए थी, लेकिन कोरोना वैश्विक महामारी के कारण जनगणना टाल दी गई। उसके बाद भी चार साल निकल गए, लेकिन जनगणना की प्रक्रिया तक शुरू नहीं की गई। अब सवाल है कि स्थापित क्रम के मद्देनजर क्या जनगणना 2031 में कराई जाएगी? जाहिर है कि जाति जनगणना भी तभी होगी। मौजूदा लोकसभा का कार्यकाल 2029 तक है। सरकार को महिला आरक्षण कानून भी लागू करना है। परिसीमन का काम भी पूरा होना है। इस साल के अंत में बिहार में चुनाव हैं। 2026 में तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और असम सरीखे महत्वपूर्ण राज्यों में चुनाव हैं। 2027 में देश के सबसे बड़े राज्य उप्र में चुनाव हैं। जाति जनगणना इन चुनावों के दौरान पूरी नहीं हो सकती। बेशक भाजपा-एनडीए इस घोषणा से ही राजनीतिक लाभ उठा सकते हैं। लोकसभा चुनाव, 2024 के दौरान कांग्रेस, सपा, द्रमुक, राजद आदि दलों ने जाति जनगणना के मुद्दे को खूब उछाला। नारा दिया गया-'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी।' इसी के आधार पर सवाल किया जा सकता है कि यदि देश में दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों आदि वर्गों की जनसंख्या करीब 90 फीसदी है, तो क्या आरक्षण उतना बढ़ाया जा सकता है? राहुल गांधी ने लगातार 50 फीसदी आरक्षण की 'दीवार' को तोडऩे की बात कही है। यह अधिकतम सीमा सर्वोच्च अदालत ने तय कर रखी है। यदि संख्या के अनुपात में आरक्षण और व्यवस्था को बदला नहीं जा सकता, तो जाति जनगणना के फायदे क्या होंगे? हां, शिक्षा और रोजगार में आरक्षण फिर से तय किया जा सकेगा। उसे भी संसद में पारित किया जाएगा। राजनीतिक दलों को सामाजिक गठबंधनों, नेतृत्व, उम्मीदवार चयन की रणनीति पर पुनर्विचार करना होगा। जाति जनगणना को लागू करने में चुनौतियां बहुत हैं।

# समस्याओं को निपटाना क्यों? हल करने की सतत कोशिश करना चाहिए

**—संचालन -डॉ. स्वाति तिवारी**

इंदौर की महिलाओं की पहली साहित्यिक संस्था इंदौर लेखिका संघ एक साहित्यिक संस्था है। 1997 में यह संस्था साहित्यकार डॉ स्वाति तिवारी द्वारा महिलाओं की पठन पाठन और लेखन में रूचि जाग्रत करने के उद्देश्य से स्थापित की गई थी। विगत 28 वर्षों से यह संस्था सतत साहित्यिक आयोजन कर रही है। .इंदौर लेखिका संघ द्वारा मनुष्य जीवन में आनेवाली समस्याओं और उनके समाधान विषय पर पर केन्द्रित एक वर्चुअल परिसंवाद आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किये। .कार्यक्रम का विषय संस्था की अध्यक्ष विनीता तिवारी ने प्रस्तुत किया ,विषय में प्रवेश और संचालन संघ की संस्थापक डॉ. स्वाति तिवारी ने किया । बाधा, कठिनाई या चुनौती को समस्या कहते हैं या ऐसी स्थिति जिसमें व्यक्ति सुल्झाने का प्रयत्न करता। दक्षताओं को धत्ता बताते हुए किसी प्रश्नचिन्ह का निरुत्तर बने रहना ही समस्या है। मानस पंथ के अनुसार -

प्रथम दृष्ट्या में चुनौती जब शारीरिक या मानसिक या दोनों की क्षमताओं को निर्मूल साबित करती है तो वह समस्या कहलाती है। मनोवैज्ञानिक रूप से किसी गुत्थी का अबूझ बने रहना ही समस्या कहलाती है।

यदि आपके जीवन में समस्या आ रही है तो उससे लड़ने का जज़्बा भी बनाये रखिये। एक दिन सफलता मिलनी तय है।कई बार लोग समस्याओं को जस का तस जीवन में बने रहने देते हैं ,इक तरह से वे स्वयम को उन समस्याओं के अनुरूप ढाल लेते है जैसे उन्हें निभा रहे हों ,

जिस मुश्किल का समाधान आप नही कर पा रहे है या दूसरे शब्दों में कहे आप के पास कोई हल नही है वही समस्या है ।

### आपकी सारी समस्या नीचे वर्णित श्रेणी में आएगी

आर्थिक,शारीरिक,पारिवारिक,सामाजिक,व्यक्तिगत कई प्रकार की हो सकती है इन्हें सतत सुलझाने का प्रयास ही इनसे निकलने का रास्ता भी देते है। क्या सोचती हैं इंदौर लेखिका संघ की लेखिकाएं आइये बात करते हैं

**1 .समाधान ही समस्या मूल मंत्र है- डॉ इंदु जैन 'इंदू' इंदौर**

जीवन में समस्याएं तो होंगी ही ।समस्याएं का जीवन का एक अभिन्न अंग है ।जब तक जीवन है समस्याएं तो आती रहेगी। इनसे डरना या घबराना इसका हल नहीं है। समाधान खोज कर ही इसका हल निकाला जा सकता है। हर छोटी से बड़ी समस्या जो जीवन में आती है इसका कारण खोज कर सही निर्णय करना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर अगर हम देखें की पुराने समय में कोई भी समाचार अगर किसी को देना है तो उसके लिए कितनी मेहनत करनी होती थी और उसमें कितना समय चला जाता था।

जैसे कि पहले कबूतर के साथ चिट्ठी भेजा करते थे। उसके बाद पत्र व्यवहार का समय आया। धीरे-धीरे व्यवस्था में सुधार हुआ। लेकिन आज अगर हम देखते हैं तो जो फोन हमारे हाथ में है इसका निर्माण इसी समस्या के तहत हुआ है और यह कितना बड़ा समाधान आज हमारे साथ है कि हम एक दूसरे के कितने करीब हैं मिलों की दूरियां भी मायने नहीं रखती। एक ही सेकंड में हम अपनी बात सामने वाले व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं ।

जैसे कि आज में अगर कुछ लिख रही हूं- अपनी रचना आप सभी के बीच में भेज पा रही हूं तो यही एक माध्यम है ।

बस इसी तरह हर समस्या का हाल समझदारी और सोच मुझे निकाला जा सकता है।

**2. हर समस्या का धैर्य एवं शांत चित्त से समाधान खोजने की कोशिश करना चाहिए- साधना शर्मा**

जीवन में समस्याओं का होना बहुत ज़रूरी है क्योंकि अगर हमें सब कुछ सरलता से मिल जाता है तो हम जीवन का अर्थ ही नहीं समझ सकते हाँ यह ज़रूर है हर समस्या का धैर्य एवं शांत चित्त से समाधान खोजने की कोशिश करना चाहिए और उसके बाद जो खुशी मिलती है वह अतुलनीय है क्योंकि अगर हम समस्याओं के बारे में सिर्फ़ सोचते ही रहे तो सिवाय दुःख के और कुछ नहीं मिलेगा जीवन इनके बिना अर्थविहीन है इनका ताकत से सामना करना चाहिए तभी जीवन अर्थसंगत होगा

**3 .समस्याओं को निभाना क्यों? समस्याओं को हल करने का सतत प्रयास करना चाहिए- प्रतिभा भट्ट, सागर**

मानव एक चिंतनशील प्राणी है स्वविवेक और बुद्धिमत्ता का गुण सभी में विद्यमान है । समस्याएं हर मनुष्य के जीवन में कभी न कभी किसी न किसी दौर में आती है या यूं कहले बिना समस्या के जीवन ही नहीं । समस्या है तो हल भी होता है अगर हम चिंता के बजाय चिंतन करे उस पर काम करे । कई बार समस्या के चुनौती के रूप में होती है और इसके पीछे का कारण हमे समझ नहीं आता लेकिन ऐसी चुनौतियां हमारे अंदर का सोया कैलिबर जगाने आती है हमे पता ही नहीं होता कि हममें इतनी क्षमता भी हो सकती है । समस्याएं हमे परखने आती है और कई ये कर्म बंधन से भी जुड़ी रहती है । जिन्हें हम जाने अनजाने में पैदा कर लेते है कारण चाहे जो भी हो अगर स्वविवेक, धैर्य, और अच्छी सलाह से काम लिया जाए तो समस्या का समाधान भी शीघ्र हो जाता है । बहरहाल जिंदगी कैसी भी जो चाहे समस्या से घिरी हो या समाधान मिले हमे हर घड़ी शांत चित्त और ईश्वरीय इच्छा समझ उनके मार्गदर्शन में सौंप कर कर्म करते रहना चाहिए खुश रहे, चिंता नहीं चिंतन करे और अपने सामर्थ्य को पहचाने ।

**4 .समस्याओं को हल करने का सतत प्रयास करना चाहिए क्योंकि मनुष्य में सोचने- समझने की अद्भुत क्षमता है-आशा जाकड़, इंदौर**

मानव सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी है। यदि जीवन है तो समस्याओं का आना स्वाभाविक है।मानव जीवन में सुख-दुख का आवागमन होता रहता है। समस्याएं भी अनायास पहाड़ जैसी सामने खड़ी हो जाती है तो उनका समाधान करना भी आवश्यक होता है। क्योंकि समस्याओं से जीवन में परेशानियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और जीवन तनाव पूर्ण हो जाता है ।समस्याएं उत्पन्न होती है तो उनका हल/समाधान भी स्वतन्मिल जाता है। मनुष्य में सोचने- समझने की अद्भुत क्षमता है। मेहनत करने की अनुपम शक्ति है। समस्याएं आने पर अपने विवेक से,अपनी शक्ति से अथक मेहनत से उसका समाधान /उसका उपाय ढूँढ ही लेता है।

और जीवन सरलता से पटरी पर दौड़ने लगता है।।

**5 .समस्याएँ जीवन का एक अटूट हिस्सा है आती जाती घबराना नहीं चाहिए - रंजना शर्मा 'सुमन'**

इंदौरसमस्याएँ जीवन का एक अटूट हिस्सा है। समस्या है तो समाधान भी अवश्य है। किसी भी समस्या को लेकर उस पर चिंकित होकर पूरा ध्यान उसी पर लगाना अनुचित है। होना यह चाहिए कि समस्या क्या है?इसका हल कैसे निकलेगा?इसके लिए क्या प्रयास किए जाएँ जिससे जल्दी से जल्दी हम इस समस्या से निवृत्त हो सकें। समस्या उत्पन्न होने के कारणों पर भी गंभीरता से चिंतन-मनन कर जीवन में दोबारा इस तरह की कोई समस्या उत्पन्न न हो इस हेतु प्रयास करना चाहिए।

मानव जीवन बहुत कठिन है ।यहाँ हर क्षण कोई न कोई समस्या उत्पन्न होती है ।किन्तु उन समस्याओं से निजात पाने हेतु व्यक्ति को सत्य, न्याय, कर्मठता एवं मानवता का हाथ थामें रहना चाहिए। जिससे समस्या आई भी तो आपके गुणों को देखकर अपने आप किनारा कर लेगी।

किसी भी समस्या से जूझते रहना उचित नहीं है बल्कि उसके समाधान हेतु प्रयास करना ही हमारा परम धर्म है।

**6 .बड़ी-बड़ी समस्याओं को भी ठंडे दिमाग से सोचकर सुलझाने की कोशिश करना चाहिए -सुरेखा सरोदे**

समस्याएँ जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन उनसे डरना नहीं, उनका सामना करना ही सच्ची बुद्धिमानी है। अक्सर हम छोटी-सी परेशानी में उलझ जाते हैं और उसे इतना बड़ा बना लेते हैं कि बाकी सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है। लेकिन अगर हम धैर्य और पॉजिटिव सोच के साथ सोचे, तो वही समस्या हमें एक नया सबक देती है और मजबूत बनाती है। हर मुश्किल अपने साथ एक समाधान लेकर आती है बस जरूरत है खुद पर विश्वास रखने की। जब हम बड़ी-बड़ी समस्याओं को भी ठंडे दिमाग से सोचकर सुलझाने की कोशिश करते हैं, तो रास्ता जरूर निकलता है।

**7 .इसका सकारात्मक हल निकालना चाहिए- डॉ. अंजुल कंसल कनुप्रिया**

इंदौर समस्याएं जीवन में आती जाती रहती हैं। समस्या का हल ढूंढने में समय बिताएं। समस्या दूर चली जाएगी। समस्याओं को निभाना आवश्यक नहीं है। एक प्रकार से समस्या हल नहीं होती तो दूसरी प्रकार से हल करने की कोशिश करें।

हो सकता है कि वह आपके जीवन की समस्या ही ना हो। हर बात को समस्या नहीं बनाना चाहिए। समस्या से जूझना सही नहीं है, इसका सकारात्मक हल निकालना चाहिए। समस्या को हल करने के लिए पुख्ता निर्णय लेना चाहिए।

### धैर्य धीरज से समस्या को सुलझाएं

**8 समस्या को निभाया नहीं या तो निपटाया जाता है,समस्या नहीं समाधान में हमारा विश्वास है- डॉ रजनी भंडारी**

पहले तो मुझे निभाना शब्द पर ही ऑब्जेक्शन हे समस्या को निभाया नहीं या तो निपटाया जाता है या सुलझाया जाता है

खैर- कहा जाता है समस्या का डटकर मुक़ाबला करो और किसी भी समस्या का समाधान उसी समस्या में छुपा होता है जरूरत होती है सबसे पहले समस्या के कारण और फिर उसकी उत्पत्ति के समय की समीक्षा करने की

हम महिलाये तो अपने जीवन को ही समस्या मान लेते है और छोटी छोटी बातो को इतना बड़ा कर लेते है सोच सोच कर की हम खुद को एक चक्रव्यूह में फ़सा पाते है

मैं मानती हूँ समस्या कभी किसी के द्वारा पैदा की जाती है और कभी स्वतः ही उत्पन्न हो जाती है परिस्थिति के कारण शांत मन और मस्तिष्क के संतुलन से कठिन से कठिन समस्या सुलझाई जा सकती है और आपसी बातचीत से हल की जा सकती है बिंदु की माफिक बात को हम विकराल समस्या बना देते है कभी कभी गलतफहमी के कारण भीतो आज कहिए समस्या नहीं समाधान में हमारा विश्वास है असंभव नहीं संभव है

आशा और उम्मीद पर टिकी है दुनिया

**9 . नेपोलियन के शब्दकोष में असंभव शब्द था ही नहीं-अचला गुप्ता**

इंदौरमनुष्य का जीवन ईश्वर प्रदत्त वरदान है। हमारे जीवन में खुशियों के अलावा दुख एवं समस्याएं भी आती रहतीं हैं।जैसे हम खुशियों को आत्मसात करते हैं वैसे ही समस्याओं को भी सुलझाने की कोशिश सकारात्मक दृष्टिकोण से हमें करना चाहिए।यदि समस्याएं हैं तो समाधान भी होगा। नेपोलियन के शब्दकोष में असंभव शब्द था ही नहीं।हम भी युक्ति से समस्याओं को निपटा सकते हैं बशर्ते कि हम उन्हें ?कठिन न समझें।

मन की शक्ति अपार होती है। यदि हम समस्याओं को जीवन का एक हिस्सा समझें तो हमें निराशा कभी न होगी।

जीवन में उतार चढ़ाव की प्रक्रिया सामान्य है। दृढ़ संकल्प और विश्वास के साथ हम समस्याओं का सामना करें और समझदारी से उन्हें निपटाएं यही उपाय है उनसे छुटकारा पाने का।

**10 जब सब दरवाजे बंद हो जाते जाते है तब ईश्वर एक दरवाजा खुला रखता है- संध्या राणे**

समस्याओं को निभाना समझदारी नहीं है। इस जीवन में रात है तो दिन है ,सुख है तो दुख है, ठीक उसी तरह समस्या है तो उसका समाधान भी है। समय का चक्र अपने हिसाब से चलता रहता है। समस्या हर एक के जीवन में आती है रूप उसके भिन्न-भिन्न है। अतः समस्या कैसी भी हो उससे घबराने की अपेक्षा उस समस्या का निराकरण कैसे किया जाए इस पर सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए ना कि घबरा कर बैठ जाना चाहिए।

कहते है न जब सब दरवाजे बंद हो जाते जाते है तब ईश्वर एक दरवाजा खुला रखता है। एक आशा की किरण, एक उम्मीद जरूर रहती है और वहीं से मार्ग निकलता है। कोई भी समस्या हो तो उसका हल बहुत ही धैर्य के साथ निकालनें की कोशिश जरूर करनी चाहिए। समय जरूर लगता है पर हल निकलता है।

# जातिः और नज़रिया बदल रहा है?

**-राकेश दुबे**

जाति जनगणना की मांग करने वालों को प्रधानमंत्री मोदी 'अर्बन नक्सल' करार देते थे। अब वे खुद को और अपनी 'सुपर कैबिनेट' के सदस्यों को क्या कहेंगे, जिन्होंने जनगणना में ही जातियों को गिनने का अचानक फैसला लिया है? उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आज भी मानना है कि जातीय गणना 'तालिबानी मानसिकता' है और यह दलितों को आरक्षण से वंचित करने की कोशिश है। अब प्रधानमंत्री इस बयान पर क्या टिप्पणी करेंगे? अब तक भाजपा और संघ में जाति जनगणना को लेकर कुछ असमंजस जरूर थे, 2024 के लोकसभा चुनाव में जातीय ध्रुवीकरण ऐसा सामने आया कि उप्र में भाजपा 80 में से 33 सीटों पर ही अटक गई, नतीजतन लोकसभा में सामान्य बहुमत नहीं पा सकी। केंद्र में गठबंधन सरकार बनानी पड़ी।

2014 के बाद ओबीसी और दलित भाजपा के नए समर्थन-आधार बने और भाजपा 'ब्राह्मणों-बनियों की पार्टी' नहीं रही। ओबीसी ने 2024 के संसदीय चुनाव में भाजपा को 42 प्रतिशत से अधिक वोट दिए, लेकिन दलित भाजपा के पक्ष में आते-जाते रहे हैं। लोकसभा चुनाव के बाद संघ और भाजपा के भीतर ऐसे विश्लेषण किए गए कि नए जातीय आधार तय किए जाएं। जातियों को उनकी संख्या के आधार पर शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास आदि क्षेत्रों की सुविधाएं और जातीय हिस्सेदारी भी सुनिश्चित की जाए। यह भी आकलन सामने आया कि अब जातियों, उपजातियों के प्रभाव और जनादेश को नजरअंदाज करना संभव नहीं है, लिहाजा जाति जनगणना के फैसले पर सरकार आई। अभी यह तय नहीं है कि किस आधार पर जाति जनगणना कराई जाए। यह जरूर निश्चित है कि जिस तरह 2011 की सामाजिक-आर्थिक जातीय जनगणना के बाद 46 लाख से अधिक जातियां सामने आई थीं, कमोबेश उस आधार पर जनगणना नहीं कराई जाएगी। 1931 की जनगणना के दौरान गिनी गई जातियों की कुल संख्या 4147 थी।

इतना अंतर कैसे आ गया? 2011 की जनगणना के निष्कर्षों को सार्वजनिक भी नहीं किया गया। बहरहाल आरक्षण पर भाजपा की सोच अलग रही है। जाति जनगणना

का मकसद सीधे आरक्षण से जुड़ा है। 1990 के चुनाव घोषणापत्र में भाजपा ने लिखा था कि आरक्षण आर्थिक आधार पर होना चाहिए। अब जाति जनगणना के बाद जो संख्या सामने आएगी, सभी को आरक्षण और हिस्सेदारी देना संभव नहीं होगा। भाजपा-संघ की बुनियादी दृष्टि यह है कि जातियों की गणना और उन्हें अलग-थलग करने से कितना राजनीतिक लाभ होगा और देश में सामाजिक ताना-बाना भी बरकरार रहेगा। दरअसल जाति जनगणना न तो भाजपा, कांग्रेस और न ही सपा, बसपा, राजद, जनता दल-यू सरीखे क्षेत्रीय दलों के लिए 'समाजवाद' है। सामाजिक न्याय और समरसता भी राजनीतिक नारे हैं। 1990 में मंडल आयोग की रपट के बाद ओबीसी को शिक्षा, नौकरी में आरक्षण तय किया गया। दक्षिण के राज्यों को छोड़ कर शेष भारत में यह आरक्षण 27.5 प्रतिशत है। आरक्षण के नतीजतन कुछ ओबीसी समृद्ध होने लगे और मुख्यधारा में भी आए। ओबीसी की सियासत के आधार पर छोटे-छोटे राजनीतिक दल भी बने। कुछ आज भी अस्तित्व में हैं। मंडल के समानांतर कमंडल राजनीति भी शुरू हुई, लिहाजा भाजपा देश और सदन में सबसे बड़ी पार्टी बन गई। यह भी यथार्थ है कि 994 जातियां आज भी ऐसी हैं, जिन्हें मात्र 1-2 प्रतिशत ही आरक्षण का लाभ मिला।

आरक्षण की विसंगतियां जाति जनगणना से पहले ही खत्म की जानी चाहिए। जातीय गणना प्रधानमंत्री मोदी के जरिए भाजपा नए नेरेटिव गढ़ेगी और तमिलनाडु, केरल में राजनीतिक सेंध लगाने की कोशिश करेगी। तमिलनाडु में गौंडर, थेवर जैसी जातियों के बीच उनकी संख्या के आधार पर हिस्सेदारी का मुद्दा उठाकर द्रविड़ वोट में सेंध लगाई जा सकती है। जाति जनगणना से हिंदी पट्टी का जाती बदलेगा और यह बदलाव गैर-हिंदी पट्टी में भी महसूस किया जा सकता है। भाजपा का मानना है कि अब मराठा आरक्षण, जाट और गुर्जर आरक्षण सरीखे आंदोलन कमजोर पड़ेंगे। बहरहाल अभी तो जातीय जनगणना का फैसला कैबिनेट ने लिया है और विपक्ष का एक तबका श्रेय लूटने की राजनीति करने में मस्त हो गया है।

इतना अंतर कैसे आ गया? 2011 की जनगणना के निष्कर्षों को सार्वजनिक भी नहीं किया गया। बहरहाल आरक्षण पर भाजपा की सोच अलग रही है। जाति जनगणना का मकसद सीधे आरक्षण से जुड़ा है। 1990 के चुनाव घोषणापत्र में भाजपा ने लिखा था कि आरक्षण आर्थिक आधार पर होना चाहिए। अब जाति जनगणना के बाद जो संख्या सामने आएगी, सभी को आरक्षण और हिस्सेदारी देना संभव नहीं होगा। दरअसल जाति जनगणना न तो भाजपा, कांग्रेस और न ही सपा, बसपा, राजद, जनता दल-यू सरीखे क्षेत्रीय दलों के लिए 'समाजवाद' है। 1990 में मंडल आयोग की रपट के बाद ओबीसी को शिक्षा, नौकरी में आरक्षण तय किया गया।

# मोदी का मार्क्सवादी सखा फिर बना ऑस्ट्रेलिया पीएम

**के. विक्रम राव**

नरेंद्र मोदी के प्रिय सखा और सोशलिस्ट नेता एंथनी अल्बानीज़ ऑस्ट्रेलिया के दुबारा प्रधानमंत्री आज चुने गए हैं। अमीर ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का यह 62-वर्षीय राजनेता भी अपनी मां के प्रिय हैं, जैसे मोदी रहे। इसके एक मायने यह लगाए जा सकते हैं कि मातृभक्ति राजनीति में बड़ी मददगार है।

दो वर्ष पूर्व (24 मई 2023) की बात है। जब कई हिंदू मंदिरों पर खालिस्तानी उग्रवादियों ने हमला किया था। उसी दौर में भारतीय प्रधानमंत्री ने मंदिरों की रक्षा का मुद्दा उठाया था। मोदी तब ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर थे। खलिस्तानी उग्रवादियों ने कैरम डाउंस के विष्णु मंदिर, ब्रिसबेन के लक्ष्मी नारायण मंदिर, मिल पार्क के इस्कान मंदिर आदि को क्षति पहुंचायी। मोदी ने कहा ¯÷प्रधानमंत्री अल्बनीज और मैंने पहले भी ऑस्ट्रेलिया में मंदिरों पर हमले और अलगाववादी तत्वों की गतिविधियों के मुद्दे पर चर्चा की थी। हमने आज भी इस मामले पर चर्चा की।÷ ऑस्ट्रेलियाई पीएम ने उन्हें इस तरह की तोड़फोड़ करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया है।÷

भारत-ऑस्ट्रेलिया के संबंधों के बारे में विशेष है कि दोनों कभी आपस में नहीं भिड़ते हैं, सिवाय क्रिकेट के मैदान के। मगर आज आईपीएल खेल में यह ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर भारतीय खिलाड़ियों के साथ उनके लिए खेल रहे हैं। मसलन विराट कोहली के रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए जोश हेजलवुड, टिम डेविड, फिल्म अभिनेत्री प्रीति जिंटा की पंजाब किंग्स के लिए मार्क स्टोइनिस, ग्लेन मैक्सवेल, जोश इंग्लिस, आरोन हार्डी और जावियर बार्लेट खेल रहे हैं और उद्योगपति संजीव गोयनका के स्वामित्व वाली लखनऊ सुपरजाइंट्स के लिए मिचेल मार्श हैं। इसके अलावा चार और ऑस्ट्रेलियायी क्रिकेटर भी खेल रहे हैं।

मोदी की दो वर्ष पूर्व की यात्रा का एक तुलनात्मक महत्व भी रहा। राजीव गांधी 1986 में ऑस्ट्रेलिया गए थे। उनके बाद चार दशकों में भारत के सात प्रधानमंत्री हुए मगर कोई भी ऑस्ट्रेलिया नहीं गया। इसीलिए मोदी ने अपनी यात्रा पर घोषणा की थी ÷अगले भारतीय प्रधानमंत्री के आगमन हेतु अब आपको 28 वर्षों की लंबी प्रतीक्षा नहीं करनी होगी।÷ उन्होंने अलविदा नहीं कहा, फिर भेंट का प्रण जाहिर किया।

उसी दौरे में नरेंद्र मोदी की महत्वपूर्ण खोज रही सोने की खदानों से भरा शहर ÷लखनऊ÷। उपलब्ध दस्तावेजों में जिक्र है किसी मिस्टर रे का जो 1857 में लखनऊ में ईस्ट इंडिया कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी थे। विद्रोह के बाद वे घायल अवस्था में ऑरेंज प्रदेश (ऑस्ट्रेलिया) आकर बस गए। उन्हीं ने सिडनी से ढाई सौ किलोमीटर दूर की इस बस्ती को लखनऊ का नाम दिया। यहां मात्र 300 परिवार बसे हैं। इतिहासकार कुक ने अपनी किताब ÷लखनऊः ए वेरिटेबल गोल्डमाइन÷ में इसे भारत के लखनऊ से संपर्क होने का जिक्र किया है। आज मोदी द्वारा अपने मित्र अल्बानीज़ को बधाई देने के सिलसिले में पिछली यात्रा के निर्णय की याद भी आई। तब पूर्वी पर्थ नगर में नेल्सन एवेन्यू का नाम बदलकर ÷नारायण सिंह सैलानी मार्ग÷ कर दिया गया। यह सिख जवान प्रथम विश्व युद्ध (1917) के दौरान ऑस्ट्रेलिया की रक्षा में शहीद हुआ था। मोदी के अनुरोध पर यह नामकरण किया गया। ब्रिटेन के नौसेनाध्यक्ष एडमिल होरेशियो नेल्सन ने फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनपर्ट को ट्राफ्लागार सागरी युद्ध में हराया था (21 अक्टूबर 1805)। उस महान सेनापति का नाम हटाकर इसे एक सिख जवान के नाम कर दिया गया। मोदी ने कहा भी कि ब्रिंघम स्ट्रीट को विक्रम मार्ग, हैरिस पार्टी को हरीश उद्यान, पारमिट्टा स्क्रायड को परमात्मा चौक भी भारतीयों ने कर दिया है।

आज-चीन समर्थित पाकिस्तान से युद्ध की आशंका के सिलसिले में प्रधानमंत्री अल्बानीज़ अपने भारतीय मित्र के साथ खड़े हैं।

**अध्यक्ष - इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स।**

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक भरत पटेल द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस 11, प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित तथा 226, एमपी नगर जोन-2, भोपाल से प्रकाशित। संपादक — भरत पटेल, प्रबंध सलाहकार — भारती पटेल, संपादकीय सलाहकार — विष्णु कौशिक, सलाहकार संपादक - स्मिता पटेल, स्थानीय संपादक —हाकम सिंह गुर्जर
प्रकाशन से संबंधित समस्त समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त न्यायिक कार्यवाहियों के लिए क्षेत्राधिकार भोपाल न्यायालय का रहेगा। रजि. नं. भोपाल डिवी. 48 म. प्र. ई-मेल : dspbpl67@gmail.com, वेबसाईट: dainiksandhyaprakash.in

## प्रदेश और शहर में करोड़ों के घटिया निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार की बू : कांग्रेस

**जबलपुर ।** मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष ( ओबीसी विभाग )पूर्व प्रदेश प्रवक्ता मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी टीकाराम कोष्टा ने कहा कि प्रदेश और शहरों में केंद्र राज्य सरकारों के अधीन हो रहे करोड़ों के घटिया निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार के कारण जरा सी आंधी तूफान में जबलपुर रांझी में राज्य शासन के खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा खेलो इंडिया के अंतर्गत लगभग 26 करोड़ 80 लाख रुपए की लागत से बना खेल परिसर दर्शक दीर्घा शेड जरा सी हवा पानी में उड़ गई । पहले भी इसी प्रकार जबलपुर डुमना एयरपोर्ट शेड उड़ चुका है। फ्लाईओवर के निर्माण में भी दरारें भ्रष्टाचार के दर्शन करा रही हैं। जबलपुर नगर निगम के घटिया निर्माण के कारण आए दिन पानी की टंकी में लीकेज, पाइपलाइन का फूटना उनकी रिपेयरिंग को गंभीरता से ना लेना आम नागरिकों को भीषण गर्मी में पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसाया जा रहा है। कोष्टा ने कहा कि लोगों को प्रदेश और शहर में डिजिटल इंडिया का सपना दिखा रहे हैं हमारे मध्य प्रदेश में मेडिकल प्रवेश परीक्षा में इंदौर महानगर के ÷पीएम श्री सेंट्रल स्कूल÷ क्रमांक 1 में जहां पर 3ज30 बजे बिजली काटी और पेपर खत्म होने तक नहीं आई 600 परीक्षार्थियों को भीषण गर्मी में परीक्षा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रदेश उपाध्यक्ष ( ओबीसी विभाग) टीकाराम कोष्टा, प्रदेश कोऑर्डिनेटर अलीम मंसूरी, राजेश पटेल विजय अग्रवाल डॉ मोइन अंसारी रम्बल विश्वकर्मा मामूर गुड्डू राजा खान अशोक चौधरी पवन नामदेव रविंद्र कुशवाहा धर्मेंद्र कुशवाहा संजू ठाकुर आदि कांग्रेस नेता नेताओं ने प्रदेश शासन से मेडिकल प्रवेश परीक्षा केंद्र में हुई लापरवाही की जांच और कठोर कार्यवाही की मांग की है।

## झंकार भवन में आयोजित किया गया लाड़ली लक्ष्मी उत्सव

**मंडला।** झंकार भवन में लाड़ली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन तथा कन्यापूजन के साथ की गई। कार्यक्रम में लाड़ली बालिकाओं के द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित बालिकाओं ने गीत कविता एवं उदबोधन के माध्यम से मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाई। जनप्रतिनिधियों के द्वारा लाड़ली लक्ष्मी योजना के प्रमाण पत्र एवं दसवी-बारहवी में ग्रामीण स्तर पर प्रथम आने वाली 6 बालिकाओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अपराजिता के अंतर्गत बालिकाओं के द्वारा मार्शल आर्ट का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देने वाली लाड़ली बालिकाओं को मोमेटों देकर सम्मानित किया गया। एक पेड़ बेटी के नाम के अंतर्गत वृक्षारोपण भी लाड़ली बालिकाओं के द्वारा जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष संजय कुशराम, नगरपालिका अध्यक्ष विनोद कछवाहा एवं मण्डला जनपद अध्यक्ष संतोष सोनू भलावी, जिला परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती सालिनी तिवारी, लाड़ली लक्ष्मी बालिकाएं एवं उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

## श्री रामनवमी महोत्सव अभिनंदन समारोह आज सरस्वती विद्यापीठ उतेली में

**सतना।** हिंदू पर्व समन्वय समिति द्वारा आयोजित 21 वें श्री रामनवमी महोत्सव का समापन समारोह आज रविवार प्रातः 11 बजे से सरस्वती आवासीय विद्यापीठ उतैली के शंकर सभागार में आयोजित होगा। अभिनंदन समारोह में रामनवमी महोत्सव में सहभागिता करने वाले समस्त सामाजिक-

व्यवसायिक राजनीतिक संगठन, जाति- बिरादरी, स्वयंसेवी एवं धार्मिक संगठनों, मीडिया का सम्मान किया जाएगा । समन्वय समिति अध्यक्ष मणिकांत माहेश्वरी, संयोजक कमलजीत सिंह सेठी एवं जितेंद्र जैन ने नगर के समस्त गणमान्य नागरिकों, संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी, शक्ति केंद्र एवं वार्ड प्रभारी, मातृशक्ति, युवाशक्ति से अनुरोध किया है कि सरस्वती विद्यापीठ पहुंचकर अभिनंदन समारोह में शामिल हो।

## अरहर उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन 15 मई तक

**शहडोल ।** शासन द्वारा निर्धारित समर्थन मूल्य ।550 रुपए प्रति क्विंटल पर जिले भर में अरहर का उपार्जन किया जाएगा। खरीफ वर्ष 2024-25 में ई उपार्जन पोर्टल पर अरहर ( तुअर) फसल के उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन 15 मई तक होगा। उपार्जन के लिए किसान ई उपार्जन पोर्टल में अपना पंजीयन 15 मई से पहले करा लें। सभी सहकारी समिति प्रबंधक तुअर उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन सुनिश्चित करें। पंजीकृत किसानों को ही समर्थन मूल्य पर तुअर के उपार्जन का लाभ मिलेगा।

# 10 घंटे की कठिन तपस्या: क्यों एकांत में साधना करते हैं बाबा बागेश्वर?

**छतरपुर।** देश के जाने-माने कथा वाचक बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर अपनी दिल्ली, चेन्नई, बेंगलुरु की यात्रा के बाद धाम पहुंच चुके है। यात्रा के बाद बाबा अब 5 दिनों की हनुमंत साधना पर चले गए है। बाबा बागेश्वर रोजाना एकांत में 10 घंटे का कठिन तप कर रहे हैं। यह तप शनिवार से शुरू हुआ है और 8 मई तक चलेगा।

### बाबा बागेश्वर का 10 घंटे का कठिन तप

बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री दिल्ली, चेन्नई और बेंगलुरु की 10 दिवसीय यात्रा पूरी कर बागेश्वर धाम पहुंच चुके है। 11 मई तक बाबा बागेश्वर धाम में रहेंगे। उन्होंने 5 दिवसीय हनुमंत साधना शनिवार से शुरू की है, जो 8 मई तक चलेगी। इस साधना के दौरान वे प्रतिदिन 10 घंटे एकांत में कठिन तप करेंगे। जिसमें तेज गर्मी और कड़ी धूप में केवल एक गिलास दूध पर निर्भर रहेंगे।

### पहले दिन की साधकों से मुलाकात

साधना के पहले दिन बाबा बागेश्वर महाराज ने सन्यासी बाबा की साधना लेने वाले साधकों से मुलाकात की। उन्होंने साधकों के साथ उनके अनुभव साझा किए और साधना से उनके जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तनों पर विस्तृत चर्चा की। साधकों ने भी अपनी आध्यात्मिक यात्रा और साधना के प्रभावों को साझा करते हुए बागेश्वर महाराज

के मार्गदर्शन की सराहना की।

### बालाजी भगवान के किए दर्शन

दूसरे दिन रविवार को बागेश्वर महाराज ने बागेश्वर धाम स्थित बालाजी भगवान के मंदिर में दर्शन किए और विशेष पूजा-अर्चना की। इस दौरान उन्होंने भक्तों की उपस्थिति में हनुमान जी की आराधना की और साधना के उद्देश्यों को स्पष्ट किया।

### बाबा बागेश्वर की साधना का उद्देश्य

बाबा बागेश्वर ने अपनी साधना के उद्देश्य भक्तों के साथ साझा किए। उनकी साधना का मुख्य उद्देश्य भारत को हिंदू राष्ट्र के रूप में स्थापित करना, बागेश्वर धाम में प्रस्तावित कैंसर अस्पताल के निर्माण को निर्विघ्न करना और हिंदू समुदाय में एकता और संगठन को बढ़ावा देना है।

### बागेश्वर धाम में प्रतिदिन दिव्य दरबार का आयोजन

साधना के दौरान बागेश्वर धाम में प्रतिदिन दिव्य दरबार का आयोजन होगा। जिसमें भक्तों की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त शनिवार और मंगलवार को विशेष पेशी वाला दरबार भी लगेगा। जिसमें बागेश्वर महाराज भक्तों की अर्जियों पर विचार करेंगे।

### 'सामाजिक, धार्मिक और आध्यत्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है साधना'

बागेश्वर धाम के सेवादार कमल अवस्थी ने बताया कि ÷महाराज 10 दिन की यात्रा से वापिस धाम आए हैं। 5 दिवसीय हनुमंत साधना शुरू की है। महाराज रोजाना 10 घंटे एकांत में तप करेंगे। देश समाज और सनातन के लिए यह साधना न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक और धार्मिक उद्देश्यों को भी मजबूत करने का एक प्रयास है।बागेश्वर धाम में साधना के दौरान भक्तों का उत्साह चरम पर है। देशभर से आए श्रद्धालु इस पवित्र अवसर का हिस्सा बनने के लिए धाम पहुंच रहे हैं। बागेश्वर महाराज की यह साधना उनके भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

## बीएसी सीएसी प्रतिनियुक्ति में मनमानी का आरोप

### अपात्र को पात्र बता कर दी नियुक्ति

**शहडोल।** जिले के समस्त जनपद शिक्षा केन्द्रो में जिला शिक्षा केंद्र के माध्यम से रिक्त 25 बी ए सी एवं सी ए सी के पदों पर वर्तमान में स्कूलों में पदस्थ माध्यमिक शिक्षक संवर्ग एवं पुराने यूडीटी संवर्ग के शिक्षकों द्वारा किए गए आवेदनों से वरिष्ठता के आधार पर प्रति नियुक्ति के लिए चयन किया जाना था। लेकिन जिम्मेदारो ने प्रतिनिधि की वरीयता और योग्यता की जांच पड़ताल करना दूर नियम कायदों कानून को तिलांजलि देकर अपने चहते व्यक्तियों को कागजों में गोलमाल कर चयन सूची में शामिल कर लिया है। मामले को लेकर शिक्षकों में भारी आक्रोश देखा जा रहा है वही खुलेआम किए गए इस गफलत को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है।

**ऐसे हुई गड़बड़ी:** जिला शिक्षा केंद्र शहडोल द्वारा 17 अप्रैल 2025 को बीएसी एवं जन शिक्षक पद के लिए प्रतिनयुक्ति पर विकासखंड स्त्रोत केंद्र एवं जन शिक्षा केंद्र पर समान वेतनमान पर प्रतिनियुक्ति के लिए आदेश जारी किया गया। इसको लेकर कई शिक्षकों के द्वारा इस पूरी प्रति नियुक्ति प्रक्रिया पर बड़े गंभीर सवाल खड़े किए जा रहे हैं।वही एक मामला ब्यौहारी का काफी सुर्खियां बटोर रहा है,,ब्योहारी जनपद शिक्षा केंद्र में गणित विषय से ही दो बी ए सी की प्रतिनियुक्ति की गई है इनमें शिव बहादुर सिंह और भानु पटेल शामिल है प्रतिनियुक्ति के दौरान जिला शिक्षा केंद्र द्वारा काउंसलिंग में जिन नियमों का पालन किया जाना चाहिए उसके अनदेखी करते हुए केवल सोर्स सिफारिश और दबाव के चलते पूरी चयन प्रक्रिया में गोलमाल करने का गंभीर आरोप लग रहा है। ठीक इसी प्रकार सोहागपुर जनपद शिक्षा केंद्र भी चर्चा का विषय बना है। यहाँ बीएसी एवं सी ए सी पद पर प्रतिनियुक्ति के लिए हायर सेकेंडरी स्कूल के शिक्षको के द्वारा किए गए आवेदनों को काउंसलिंग में निरस्त कर उच्च पद प्रभार प्राप्त माध्यमिक शिक्षक मीनाक्षी तिवारी गणित विषय को प्राइमरी स्कूल डोंगरिया टोला मे पदस्थापना दिखाकर प्रतिनिधि के लिए चयन कर लिया गया, जानकारों के अनुसार सुश्री मीनाक्षी तिवारी की वर्तमान पदस्थापना एक शाला एक परिसर के तहत संचालित एकीकृत हायर सेकेंडरी स्कूल महारानी लक्ष्मीबाई शहडोल में है जिसे लेकर प्रतिनियुक्ति पर शिक्षकों के द्वारा भेदभाव एवं नियमों की अनदेखी का गंभीर आरोप लगाया जा रहा है तो दूसरी तरफ प्रति नियुक्ति के आदेश में तथ्यों को छुपाया जाना पूरी प्रतिनियुक्ति और काउंसलिंग प्रक्रिया पर एक बड़ा सवालिया निशान खड़े कर रही है हालांकि यह पूरी प्रतिनियुक्ति प्रक्रिया और काउंसलिंग एक बड़ा जांच का विषय है जिस पर एक उच्च स्तरीय जांच के बाद ही किसी प्रकार के आरोप को सत्यापित माना जा सकता है। बहरहाल मामला शिक्षा से जुड़ा महत्वपूर्ण और संवेदनशील है वही नियम कानून का पालन सभी अधिकारी कर्मचारियों के लिए करना अनिवार्य है

जहां कुछ गलतियों के कारण पूरी चयन प्रक्रिया पर बड़े सवाल खड़े हो जाते हैं इसलिए समय रहते वरिष्ठ अधिकारियों को इस मामले को संज्ञान में लेकर पूरी प्रति नियुक्ति प्रक्रिया और काउंसलिंग की जांच किया जाना चाहिए।

### इनका कहना है

मेरे से 3-4 महीने पहले से इस विद्यालय मे मीनाक्षी पदस्थ है, डीसी मैडम ने कोई आदेश जारी किया है उसके तहत उमेश श्रीवास्तव सर ने उन्हें ज्वाइन कराया था बाकी की जानकारी मेरे कार्यलय मे पदस्थ सोनी जी से पूछ कर बताती हूँ।

**प्राचार्य साधना जैन**
एमएलबी स्कूल शहडोल

गणित भी विज्ञान का ही विषय है चयन किया जा सकता है।

**अमरनाथ सिंह**
डी पी सी, जिला शिक्षा केंद्र शहडोल

## जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत सांसद राहुल सिंह लोधी ने किया श्रमदान

**दमोह।** जल है, तो कल है- सांसद राहुल सिंह लोधी जल गंगा संवर्धन अभियान स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के 45 वा सप्ताह अंतर्गत बांदकपुर में स्थित प्राचीन एवं ऐतिहासिक बावड़ी में श्रमदान गया किया। सांसद राहुल लोधी ने समस्त क्षेत्र वासियों से अपील करते हुए कहां की जो जल के प्रमुख स्रोत है चाहे वह कुएं हो, तालाब हो, नदिया हो, प्राचीन बावड़ी हो उन्हें सुरक्षित और साफ रखने की जिम्मेदारी हम सब की है। इन पुराने जल स्त्रोतों की सफाई से जल का स्तर एवं वाटर लेवल भी बड़ेगा। सांसद राहुल लोधी सभी से अपील करते हुए कहा कि हम सभी को सप्ताह में एक दिन अवश्य श्रमदान करना चाहिए और अपने आसपास के पवित्र स्थान जल स्त्रोतों में जाकर साफ सफाई करनी चाहिए। भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार एवं प्रदेश की सरकार द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान अवश्य ही अपने नए आयाम साबित करेगा। साथ ही श्रमदान कार्यक्रम उपरांत स्वच्छता हेतु शपथ दिलाई गई।

## ट्रक चालक की लापरवाही खड़े ट्रक में घुसी पिकअप , मल्सीपुर में सड़क से उतरी कार

**सिरोंज।** रविवार को सड़क दुर्घटना के दो मामले सामने जिसमें एक ट्रक चालक की लापरवाही से हादसा हुआ तो दूसरी घटना में जीप सड़क नीचे उतर गई पिकअप वाहन चालक गंभीर रूप से घायल हो गया वहीं कार बच्चों को बचाने के चक्कर सड़क नीचे उतर गई उसमे बैठे लोगों कों भी मामूली चोटे आई है। गनीमत रही कोई बड़ी जनहानि नहीं हो जिस तरह से कार सड़क से नीचे गई है उसको देखते हुए बड़ी घटना भी हो सकती थी । थाने से मिली जानकारी अनुसार आरोन रोड पर घाटी के ऊपर एक ट्रक चालक ने अपने ट्रक में कुछ खराबी होने पर उसको साइड में न लगाकर सड़क पर खड़ा कर दिया उधर जबलपुर से राघोगढ़ इसी रास्ते से जा रहा था तभी सुबह 5 बजे के करीब बीच सड़क पर खड़े ट्रक उसको नजर नहीं आया पीछे से इसकी पिकअप गाड़ी इसमें चली गई उसकी चपेट में आने से वहां गंभीर रूप से घायल हो गया पुलिस ने इसको इलाज के लिए शासकीय राजीव गांधी अस्पताल में भर्ती कराया प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया चालक पर ट्रक को लापरवाही से सड़क पर खड़ा करने और दुर्घटना होने पर मामला दर्ज करके ट्रक को जब्त कर लिया। इसके अलावा पुलिस ड्राइवर को भी पुलिस थाने लेकर आई। ट्रक उत्तर प्रदेश का है इसी तरह मल्सीपुर गांव में बच्चों को बचाने के चक्कर में कर सड़क नीचे उतर गई घन गनीमत रही की इसमें कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ सभी को छोटी-मोटी छोटे आई हैं।

## तेंदूखेड़ा में मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह निकाह योजना में जोड़े बंधन में बंधे

### सामूहिक विवाह कार्यक्रम में लगभग 1700 जोड़े बंधे विवाह बंधन में 27 निकाह हुए

**दमोह ।**-बड़ी प्रसन्नता का विषय है तेन्दूखेड़ा में 6 वां मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह-निकाह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ है लगभग 1700 जोड़े विवाह बंधन में बंधे हैं, जबसे मैं विधायक बना हूं 6 हजार से भी ज्यादा विवाह संपन्न कराने का कार्य किया है। सरकार लगातार गरीब वर्ग की चिंता करने वाली सरकार है, बेटियों की चिंता करने वाली सरकार है, यह वह सरकार है, जिसमें घर में बेटी पैदा होती है तो सरकार बेटी को लाड़ली लक्ष्मी बनाने का काम करती है। बिटिया के विवाह की चिंता भी सरकार माता-पिता को नहीं करने देती। सरकार ने बहिनों की चिंता करना भी शुरू किया और लाड़ली बहना योजना लेकर आये। हर बहिन के खाते में 1250 रूपये डालने का काम सरकार कर रही है, साल में 15 हजार रूपये एक बहिन के खाते में आते हैं, कहने का तात्पर्य यह कि लाड़ली बहिनों की चिंता जितनी सरकार ने की है उतनी किसी सरकार ने नहीं की। बहिनो की चिंता ही नहीं सरकार भाईयों की चिंता भी कर रही है सरकार किसान भाईयों को 12 हजार रूपये साल के हिसाब से किसान सम्मान निधि दे रही है इस आशय के विचार आज तेन्दूखेड़ा में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत आयोजित सामूहिक विवाह-निकाह कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये प्रदेश के संस्कृति, पर्यटन, धर्मस्व एवं धार्मिक न्यास ( स्वतंत्र प्रभार ) राज्यमंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी ने व्यक्त किये। राज्यमंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी ने कहा क्षेत्र के लोगों में बड़ा उत्साह और आनंद है, क्षेत्र के सारे नागरिक प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव जी का भी धन्यवाद ज्ञापित कर रहे है, जिन्होंने गरीब परिवार की बेटियों का विवाह करवाने का संकल्प लिया है। कार्यक्रम के दौरान वर-वधु के लिये 49-49 हजार रूपये की राशि के चैक वितरित किये गये है, मै सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। कार्यक्रम में सांसद राहुल भैया, जिला पंचायत अध्यक्ष रंजीता गौरव पटैल, भाजपा जिलाध्यक्ष श्याम शिवहरे पूर्व मंत्री दशरथ सिंह, ऋषि सिंह लोधी सहित बड़ी संख्या में सभी ने अपनी सहभागिता निभाई है। राज्यमंत्री धर्मेन्द्र सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

## नगर निगम का पोर्टल महीनेभर से बंद, 22 करोड़ की चोट लगी, कब शुरू होगा पता नहीं

**इंदौर।** नगर निगम का टैक्स पोर्टल ? एक महीने से बंद है। 1 अप्रैल से पोर्टल बंद होने की वजह से न तो झोन कार्यालयों में और न मुख्यालय में करों की राशि जमा हो रही है। निगम ने यह पोर्टल नए वित्तीय वर्ष का डेटा अपलोड करने के उद्देश्य से बंद किया था। कहा था कि कुछ दिनों में इसे फिर से चालू कर दिया जाएगा। लेकिन, अप्रैल का पूरा महीना बीत जाने के बाद भी पोर्टल चालू नहीं हो सका। नतीजा ये हुआ कि नगर निगम को इस एक महीने में करीब 22 करोड़ रुपए के राजस्व का नुकसान उठाना पड़ा।

महापौर पुष्यमित्र भार्गव के कार्यकाल में अब तक पेश तीन बजट में से दो बार इंदौर को डिजिटल बनाने का वादा प्रमुखता से रखा गया। इस दिशा में नगर निगम ने कई योजनाएं भी तैयार कीं। लेकिन, हालात यह हैं कि कर वसूली जैसे बुनियादी काम भी ऑनलाइन नहीं हो पा रहे। पोर्टल बंद होने से नागरिक एडवांस टैक्स की छूट का लाभ लेने के लिए निगम कार्यालय पहुंचते हैं। लेकिन, वहां से उन्हें बिना भुगतान किए लौटना पड़ रहा है। पूरे अप्रैल महीने में निगम की आय पर असर पड़ा है। आमतौर पर इस महीने में 20 से 22 करोड़ रुपए का कर निगम को मिलता है।

नगर निगम के अधिकारियों ने पोर्टल की बहाली के लिए कई बार भोपाल के अधिकारियों से संपर्क किया। हर बार यही आश्वासन मिला कि बस कुछ ही दिनों में पोर्टल शुरू हो जाएगा। लेकिन, अब तक कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। एक ओर नगर निगम को आर्थिक संकट से गुजरना पड़ रहा, दूसरी ओर नागरिकों की समस्याएं भी बढ़ रही हैं। कई प्रकार के टैक्स जैसे सम्पत्ति कर, जल कर, आदि जमा नहीं हो पाने से न तो लोगों को रसीद मिल रही है और न रिकॉर्ड अपडेट हो रहा हैं।

### अब कैसे होगी टैक्स की वसूली

इस वित्तीय वर्ष की पहली लोक अदालत 10 मई को होना है। इसमें निगम बकाया टैक्स की वसूली पर विशेष ध्यान देता है। लेकिन पोर्टल की मौजूदा स्थिति को देखते हुए अधिकारियों के सामने यह बड़ी चिंता बन गई है कि टैक्स वसूली कैसे की जाएगी। पोर्टल चालू न होने की स्थिति में अधिकारियों के पास नागरिकों के बकाया टैक्स की जानकारी नहीं होगी, और न वे कर जमा करने आए नागरिकों को बिल या रसीद दे सकेंगे। यह स्थिति नगर निगम की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर रही है।

## अघोषित बिजली कटौती से त्रस्त ओबेदुल्लागंज क्षेत्र की जनता

### कोई सूचना का माध्यम नहीं, कर्मचारी देते हैं उलटा जवाब

**ओबेदुल्लागंज, सुरेश केवट।** प्रदेश में गर्मी का पारा बढ़ता जा रहा है और वहीं ओबेदुल्लागंज और पूरे भोजपुर क्षेत्र की जनता बिजली विभाग की अघोषित कटौती से परेशान है। लोगों का कहना है कि विद्युत विभाग अपनी दरों में लगातार बढ़ोतरी कर रहा है लेकिन अपने कर्मचारियों और व्यवस्थाओं पर विभाग का कोई नियंत्रण नहीं है। दिन भर लाइट की आवाजाही लगी रहती है और रात में भी घंटों अंधेरे में रहना जनता की मजबूरी बन गई है। भीषण गर्मी के इस दौर में भरी दोपहर में लाइट न रहना जन जीवन बेहाल बना रहा है।

ज्ञात हो कि गर्मी और बरसात के पूर्व विद्युत विभाग दिन दिन भर का शट डाउन लेकर मेंटेनेंस का कार्य करता है इस के बाद भी लाइन ओर ट्रांसफार्मर में फॉल्ट बने रहते हैं, कम ज्यादा वोल्टेज से लोगों के घरों के उपकरण भी जल जाते हैं। आंधी और हवा में तारों का टूटना और दुर्घटना होने का डर बना ही रहता है। विभाग के पास अघोषित कटौती की सूचना देने का कोई विश्वस्त माध्यम नहीं है, कार्यालय का फोन भी बिजली ना होने की स्थिति में बंद रहता है। इन सब समस्याओं का विद्युत विभाग के अधिकारियों के पास भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है। जनता का मानना है यदि यह बिजली की लुकाछिपी बंद नहीं हुई तो मजबूरन लोगों को आंदोलन का मार्ग लेना होगा।

### इनका कहना है

मौसम के कारण फॉल्ट होते हैं जिन्हें ढूंढने और ठीक करने में समय लगता है। सूचना दी जाए इस हेतु अधीनस्थों को कह देता हूं

**गौरव चावला, उप यंत्री विद्युत विभाग**

भरी दोपहर में काटी जाने वाली बिजली से व्यवसाय में समस्या आ रही है और घरों में भी पीने के पानी आदि की व्यवस्थाएं बिगड़ गई हैं।

**योगेश श्रीवास्तव**
व्यवसाई, ओबेदुल्लागंज

**नाम परिवर्तन सूचना**

मेरा नाम शादी से पूर्व भगवती पुत्री चन्दनमल नाम था, शादी उपरांत मेरा नाम ज्योति पत्नि प्रहलाद तोलानी हो गया है। अब मैं ज्योति पत्नि प्रहलाद तोलानी नाम से सभी शासकीय /अशासकीय विभागों में जानी-पहचानी एवं लिखी जाऊँगी।

**पता - म.नं. 77 भेल नगर, अयोध्या वायपास रोड, शिव मंदिर, भोपाल**

# अब एमपी के इस शहर में भी लैंड करेंगे हवाई जहाज

## क्षेत्रीय विकास को मिलेगा नया आयाम

**भोपाल।** मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में वर्षों से निष्क्रिय पड़ी गोपालपुरा एयर स्ट्रीप को अब सक्रिय बनाने की दिशा में बड़ी पहल की जा रही है। उज्जैन में 2028 में होने वाले सिंहस्थ महाकुंभ को ध्यान में रखते हुए झाबुआ में हवाई सेवाओं की शुरुआत की संभावनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। जिला मुख्यालय से मात्र 4 किलोमीटर दूर स्थित इस एयर स्ट्रीप के विस्तार के लिए लगभग 52 करोड़ रुपये का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा गया है, जिसे जल्द स्वीकृति मिलने की उम्मीद है। वर्तमान में यह एयर स्ट्रीप केवल वीआईपी हेलीकॉप्टर लैंडिंग के लिए उपयोग की जाती है, क्योंकि इसका रनवे केवल 792 मीटर लंबा है, जो बड़े विमानों की लैंडिंग के लिए पर्याप्त नहीं है। नए प्रस्ताव के तहत रनवे को 2600 मीटर तक बढ़ाया जाएगा, ताकि छोटे हवाई जहाज भी यहां उतर सकें। इसके साथ ही विमान हेंगर, कंट्रोल रूम, विद्युतीकरण और बाउंड्रीवॉल जैसी आधारभूत संरचनाओं के निर्माण की योजना भी शामिल है।

**भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया में वन विभाग की भूमिका:** रनवे विस्तार के लिए अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता पड़ेगी, जो फिलहाल वन विभाग के अधीन है। ऐसे में वन विभाग से अनुमति लेकर जमीन का हस्तांतरण किया जाना प्रस्तावित है। यह प्रक्रिया जैसे ही पूरी होती है, विस्तारीकरण कार्यों की शुरुआत की जा सकती है।

**उज्जैन सिंहस्थ में निभाएगा अहम भूमिका:** सिंहस्थ जैसे विशाल धार्मिक आयोजन के दौरान इंदौर एयरपोर्ट पर भीड़ अत्यधिक बढ़ सकती है। ऐसे में झाबुआ एयर स्ट्रीप का विकल्प के रूप में विकसित होना न केवल यात्री भार को बांटेगा, बल्कि यहां से सड़क मार्ग द्वारा तीर्थयात्रियों को सीधे उज्जैन पहुंचने की सुविधा भी मिल सकेगी। झाबुआ को पीएम श्री पर्यटन वायु सेवा और धार्मिक पर्यटन हेली सेवा योजनाओं में भी शामिल किया गया है, जो इसके महत्व को और बढ़ाता है।

**35 साल पुराना है एयर स्ट्रीप का इतिहास:** यह एयर स्ट्रीप वर्ष 1989-90 में बनाई गई थी और अब तक इसका उपयोग सीमित रूप से वीआईपी मूवमेंट के लिए होता रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने झाबुआ दौरे के दौरान इसी एयर स्ट्रीप पर हेलीकॉप्टर से उतरे थे, जिससे इसकी रणनीतिक उपयोगिता साबित होती है।

**विफल रही एविएशन ट्रेनिंग सेंटर की योजना:** वर्ष 2006-07 में इस स्थान पर एक एविएशन ट्रेनिंग सेंटर स्थापित करने की योजना बनाई गई थी। इसके लिए राज्य सरकार और एयरोस्पेस एकेडमी ऑफ सेंट्रल इंडिया के बीच करार हुआ और एयर स्ट्रीप को 10 वर्षों के लिए लीज पर दिया गया था। परंतु योजना आगे नहीं बढ़ सकी और बाद में समझौता भी समाप्त हो गया।

**लोक निर्माण विभाग की पहल:** झाबुआ लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री (ईई) आरिफ मोहम्मद गौरी ने बताया कि एयर स्ट्रीप के विस्तार का प्रस्ताव शासन को भेजा जा चुका है। उज्जैन सिंहस्थ और क्षेत्रीय पर्यटन को देखते हुए इसकी मंजूरी जल्द मिलने की आशा है। उनका मानना है कि यह परियोजना न केवल जिले के विकास को गति देगी, बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी नए अवसर खोलेगी।

# सोने की कीमतों में आया बदलाव

**नई दिल्ली, एजेंसी।** सोने चांदी के दामों में उतार चढ़ाव का दौर लगातार जारी है। अगर आप आज सोमवार को सोना या चांदी खरीदने का प्लान बना रहे है तो पहले ताजा भाव जान लें। आज 5 मई को सोने की कीमतों में 220 प्रति 10 ग्राम की वृद्धि हुई और चांदी के दामों में 1000 प्रति किलो की गिरावट आई है। नई कीमतों के बाद सोने के दाम 95 हजार के आसपास और चांदी के भाव 97 हजार पर ट्रेंड कर रहे है। आज सोमवार को सराफा बाजार की ओर जारी सोने और चांदी (Gold Silver Price Today) के अनुसार आज 5 मई 2025 को 22 कैरेट सोने के दाम 87,900 , 24 कैरेट का भाव 95, 880 और 18 ग्राम सोने का रेट 71,920 रुपए पर ट्रेंड कर रहे है। वहीं 1 किलो चांदी का रेट 97,000 रुपए चल रहा है।

### 18 कैरेट सोने का आज का भाव

दिल्ली सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 71, 920/- रुपये। कोलकाता और मुंबई सराफा बाजार में 71, 800/- रुपये। इंदौर और भोपाल में सोने का भाव 71, 670 चल रहा है। चेन्नई सराफा बाजार में कीमत 72, 500/- रुपये पर ट्रेड कर रही है।

### 22 कैरेट सोने का आज का भाव

भोपाल और इंदौर में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 87, 590/- रुपये । जयपुर, लखनऊ, दिल्ली सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 87, 900/- रुपये । हैदराबाद, केरल, कोलकाता, मुंबई सराफा बाजार में 87, 750/- रुपये ट्रेंड कर रहा है।

### 24 कैरेट सोने का आज का भाव

भोपाल और इंदौर में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 95,550 रुपये। दिल्ली जयपुर लखनऊ और चंडीगढ़ सराफा बाजार में आज 10 ग्राम सोने की कीमत 95, 880/- रुपये। हैदराबाद, केरल, बैंगलुरू और मुंबई सराफा बाजार में 95, 730/- रुपये । चेन्नई सराफा बाजार में कीमत 95,530/- रुपये पर ट्रेंड कर रहा है। जयपुर कोलकाता अहमदाबाद लखनऊ मुंबई दिल्ली सराफा बाजार में 01 किलोग्राम चांदी की कीमत 97,000 /- रुपये चल रही है। चेन्नई, मदुरै , हैदराबाद,और केरल सराफा बाजार में कीमत 1,08,000/- रुपये। भोपाल और इंदौर में 1 किलो चांदी की कीमत 97,000/ रुपए ट्रेंड कर रही है।

## क्रिएटिव इन इंडिया' चैलेंजः विंज़ो ओर आईईआईसी ने भारतीय गेमिंग आईपी के निर्यात की नींव रखी

**मुंबई, एजेंसी।** दुनिया भर से प्रतिभाशाली क्रिएटिव एवं टेक दूरदृष्टा, वर्ल्ड ऑडियो विज़ुअल एंड एंटरटेनमेन्ट समिट (वेव्स) के लॉन्च के लिए मुंबई में एकजुट हुए हैं। देश के ग्लोबल एंटरटेनमेन्ट परिवेश में नए अध्याय की शुरूआत करते हुए भारत के अग्रणी इंटरैक्टिव एंटरटेनमेन्ट प्लेटफॉर्म विंज़ो ने इंटरैक्टिव एंटरटेनमेन्ट एण्ड इनोवेशन काउन्सिल (आईईआईसी) के साथ मिलकर भारत टेक ट्रायम्फ प्रोग्राम (बीटीटीपी-जो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की महत्वाकांक्षी पहल 'क्रिएट इन इंडिया' की आधारिशला है) के 20 विजेताओं की घोषणा की। सूचना एवं प्रसारण मत्रांलय ने दुनिया के समक्ष भारत की कंटेंट उत्पादन की क्षमता को दर्शाने के लिए 'क्रिएट इन इंडिया' गेमिंग के तहत 4 चैलेंजेज़ का लॉन्च किया था। इसी के तहत इंटरैक्टिव एंटरटेनमेन्ट एण्ड इनोवेशन काउन्सिल द्वारा भारत टेक ट्रायम्फ के तीसरे एडीशन को पेश किया गया। ये 20 विजेता 1 मई 2025 से शुरू होने वाले वेव्स में प्रदर्शन करेंगे।

## वर्ष 2035 तक 50 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात हासिल करने के लिए निजी विश्वविद्यालय महत्वपूर्णः प्रोफेसर टी.जी सीताराम

**हैदराबाद/दिल्ली एनसीआर, एजेंसी।** महिन्द्रा युनिवर्सिटी के इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल की मेजबानी में कनफेडरेशन ऑफ इंडियन प्राइवेट युनिवर्सिटीज़ (सीआईपीयू) द्वारा आयोजित भारत हायर एजुकेशन समिट (बीएचईएस) 2025 के दौरान उद्योगपतियों ने यह बात रेखांकित की है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक अनुसंधान आधारित एवं अंतरक्षेत्रीय अकादमिक वातावरण का निर्माण कर विश्व में सर्वोत्तम होने का लक्ष्य रखना होगा। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रोफेसर (डॉक्टर) टी.जी. सीताराम ने कहा,तेजी से प्रौद्योगिकी के आगे बढ़ने और वैश्विक रुख में बदलाव के साथ हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों पर दूरदर्शी नेता तैयार करने की जिम्मेदारी है। एनईपी 2020 एक परिवर्तनकारी रूपरेखा उपलब्ध कराते हुए हमें रटकर सीखने के बजाय गहन चिंतन की तरफ और साइलो से बहुक्षेत्रीय एकीकरण की और रुख करने का मार्गदर्शन करती है। निजी विश्वविद्यालय 2035 तक 50 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात हासिल करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।'बिल्डिंग नेक्स्ट जेनरेशन लीडर्स इन हायर एजुकेशन' थीम पर आयोजित इस समिट में पूरे देश से 150 से अधिक कुलपति और अकादमिक नेता शामिल हुए। महिन्द्रा युनिवर्सिटी के कुलाधिपति (चांसलर) आनंद महिन्द्रा ने (कुलपति प्रोफेसर मेदुरी द्वारा दिए गए अपने संबोधन में एक संदेश के जरिए) कहा, भारत हायर एजुकेशन समिट 2025 हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को आकार देने की दिशा में हमारी सामूहिक यात्रा में एक मील का पत्थर है। साथ मिलकर हमें वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था में सतत रूप से आगे बढ़ने के उद्देश्य से भारत के लिए मार्ग प्रशस्त करना होगा और साथ ही हमारे अनूठे और अत्याधुनिक विचारों के साथ अगुवाई करना होगा। इस समिट ने एक महत्वपूर्ण परिचर्चा छेड़ी है और अकादमिक, उद्योगपतियों और नीति निर्माताओं के मध्य साझीदारी को मजबूत किया है जिससे भारत के उच्च शिक्षा पारितंत्र को बदलने के हमारे साझा मिशन में इसका महत्व रेखांकित होता है।

## भारत ने टाईइकॉन 2025 में किया कौशल एवं एआई इनोवेशन का प्रदर्शनः एआईवर्स

**सेंटा क्लारा, कैलिफोर्निया/ नई दिल्ली , एजेंसी।** टाईइकॉन 2025 को सम्बोधित करते हुए श्री जयंत चौधरी, माननीय राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार), कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) और राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि भारत सरकार अपने महत्वाकांक्षी प्रोग्रामों जैसे स्टार्ट-अप इंडिया, स्किल इंडिया और अटल इनोवेशन मिशन के माध्यम से एक मिलियन से अधिक उद्यमियों को बढ़ावा दे रही है। रिकॉर्ड किए गए मैसेज के ज़रिए उनके संदेश को टाईइकॉन में डिलीवर किया गया, गौरतलब है कि टाईइकॉन दुनिया का अग्रणी टेक्नोलॉजी एवं एंटरेप्रेन्योरशिप कॉन्फ्रेन्स है, जिसका आयोजन सेंटा क्लारा कन्वेंशन सेंटर, कैलिफोर्निया, यूएसए में किया गया।'एआईवर्स' विषय पर आयोजित सालाना तीन दिवसीय सम्मेलन में उद्यमी, इनोवेटर्स, निवेशक और अकादमिक जगत के प्रतिनिधि एक मंच पर इकट्ठा हुए, जिन्होंने समाज एवं उद्यमों के भविष्य को आकार देने में आर्टीफिशियल इंटेलीजेन्स की भूमिका पर विचार-विमर्श किया। भारतीय प्रतिनिधियों की बात करें तो डीप-टेक, क्लाइमेट इनोवेशन, हेल्थकेयर, एआई और डिजिटल रूपान्तरण से जुड़े लीडर इस सम्मेलन में शामिल हुए, जिन्होंने ग्लोबल इनोवेशन पार्टनर के रूप में देश की बढ़ती भूमिका पर रोशनी डाली। इन प्रतिनिधियों ने प्रत्यास्थता, समावेशन और प्रयोजन-उन्मुख विकास में निहित भारतीय उद्यमिता की भावना को दर्शाया। तीन दिवसीय विशाल सम्मेलन की शुरूआत 30 अप्रैल को हुई थी।पहले दिन संदेश देते हुए माननीय मंत्री जी ने कहा, ''आज भारत ऐसे शक्तिशाली दौर से गुज़र रहा है जहां इनोवेशन, उद्यम और कौशल एक साथ मिलकर नए विश्वस्तरीय आयाम स्थापित कर रहे हैं।

## सिग्निफाई और सेल्को फाउंडेशन ने 'स्वास्थ्य किरन' सीएसआर अभियान के अंतर्गत कर्नाटक के 10 24×7 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में सौर ऊर्जा की व्यवस्था की

**मुंबई, एजेंसी।** लाईटिंग के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी कंपनी, सिग्निफाई ने अपने फ्लैगशिप सीएसआर अभियान, 'स्वास्थ्य किरन' के अंतर्गत कर्नाटक में 10 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में सौर ऊर्जा की व्यवस्था की है। यह अभियान सेल्को फाउंडेशन के सहयोग से पूरा किया गया। इस परिवर्तनकारी अभियान का उद्देश्य गाँव की स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं में रोशनी और विश्वसनीय बिजली की निरंतर उपलब्धता बनाए रखना है, ताकि वंचित समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आ सके। हर पीएचसी में 5 का सोलर पैनल, 19.2 की बैटरी और 6 द्यङ्क का सोलर पीसीयू लगाया गया है ताकि स्वास्थ्य सेवा, प्रकाश एवं आवश्यक मेडिकल उपकरणों के लिए निरंतर बिजली की आपूर्ति हो सके। इस पहल से सभी 10 केंद्रों में लगभग 70,000 यूनिट्स की बचत हो सकेगी। यानी हर साल लगभग 4.5 लाख रुपये की बचत होगी। साथ ही कार्बन उत्सर्जन में प्रतिवर्ष लगभग 50 मीट्रिक टन की कमी आएगी, जिससे बेहतर स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति के साथ ज्यादा हरित और सस्टेनेबल वातावरण को बढ़ावा मिलेगा। उद्घाटन के अवसर पर डॉ. मोहनदास, टी.बी. अधिकारी, जिला स्वास्थ्य कार्यालय, तुमकुर और डॉ. सिद्धेश्वर, तालुक स्वास्थ्य अधिकारी, सीरा ब्लॉक के साथ ग्राम पंचायत के गणमान्य लोग मौजूद थे। उन्होंने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के ढांचे को मजबूत बनाने में इस परियोजना के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की। निखिल गुप्ता, हेड ऑफ मार्केटिंग, स्ट्रेट्जी, सरकारी मामले एवं सीएसआर - सिग्निफाई, ग्रेटर इंडिया ने कहा, ''सिग्निफाई में हम लाईटिंग के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता की मदद से अपने सीएसआर अभियानों द्वारा समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

# रोटरी इंटरनेशनल पीड़ित मानवता की सेवा में अग्रणी संस्था : मलिक

**भोपाल।** रोटरी क्लब ईस्ट भोपाल के निरीक्षण की आधिकारिक यात्रा पर मंडलाध्यक्ष अनीस मालिक का सम्मान स्वागत होटल आदित्य एमपी नगर में आयोजित लिया गया । क्लब के अध्यक्ष मनोज झा ने वर्ष भर की सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी और बताया कि रक्तदान शिविर पोलियो शिविर, स्कूल में कॉपी किताब गरीब छात्र को आर्थिक सहायता 200 से अधिक पोधारोपण विभिन्न स्थानों पर एवम निदान संस्था को चिकित्सा उपकरण प्रदान किए मंडलाध्यक्ष अनीस मलिक ने क्लब की स्वर्ण जयंती वर्ष पर हार्दिक शुभकामनाएं दी सेवा प्रकल्पो के द्वारा किए जा रहे कार्यो की सराहना की ।

इस अवसर पर सामाजिक कार्यो के लिए अर्शी कुरेशी सुनील अवसरकर एवम मयंक जैन को सम्मानित किया एवम पलाश सुरजन और जी के छिब्बर को क्लब के सेवा प्रकल्पों में योगदान के लिए सम्मानित किया। इस अवसर पर रोटरी 3040 के पूर्व मंडलाध्यक्ष कर्नल महेंद्र मिश्र जिनेन्द्र जैन एवम निर्वाचित मंडलाध्यक्ष मुकेश साहू सहायक मंडलाध्यक्ष कर्नल एम सी वर्मा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अल्पना मिश्रा ओर ऋतुराज परमार ने किया आभार प्रदर्शन सुनील भार्गव ने किया।

## अग्रिम कर जमा करने वाले करदाताओं पर रखें बारीक नजर, आयकर विभाग ने दिया अहम आदेश

**नईदिल्ली, एजेंसी।** केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड यानी सीबीडीटी ने आयकर अधिकारियों को चालू वित्त वर्ष में प्रत्यक्ष कर संग्रह में सुधार की रणनीति के तहत अग्रिम कर जमा करने वाले शीर्ष करदाताओं पर बारीक नजर रखने का आदेश दिया है। साथ ही, छूट व कटौती के फर्जी दावों की पहचान करने का भी निर्देश दिया है।

# प्रवेग लिमिटेड ने बंगाराम आइलैंड रिसॉर्ट की कमान इंडियन होटल्स को सौंपी

**मुंबई, एजेंसी।** प्रवेग लिमिटेड ने अपने प्रमुख रिसॉर्ट 'प्रवेग एटोल्स', प्रवेग आइलैंड, लक्षद्वीप की संचालन जिम्मेदारी इंडियन होटल्स कंपनी लिमिटेडको औपचारिक रूप से सौंप दी है। यह हस्तांतरण दोनों कंपनियों के बीच 3 मार्च 2025 को घोषित होटल प्रबंधन समझौते के तहत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस हस्तांतरण के साथ, आईएचसीएल ने अपने प्रतिष्ठित सेलेक्शन्स ब्रांड के तहत बंगाराम आइलैंड रिसॉर्ट की पूरी कमान संभाल ली है, जिससे भारत के सबसे स्वच्छ द्वीपों में से एक पर मेहमानों को बेमिसाल लग्ज़री अनुभव देने की प्रतिबद्धता और भी मज़बूत हुई है। यह उपलब्धि प्रवेज़ और आईएचसीएल के बीच रणनीतिक साझेदारी के नए अध्याय की शुरुआत है, जिसका उद्देश्य है पर्यावरण-संवेदनशील लग्ज़री ट्रैवल को नए मायनों में परिभाषित करना। अब बंगाराम आइलैंड रिसॉर्ट आने वाले मेहमानों को ढ्ढ॥ष्टरु की विश्वस्तरीय सेवाओं, व्यक्तिगत अनुभवों और सतत् आतिथ्य परंपराओं का अनूठा संगम मिलेगा जो द्वीप की प्राकृतिक सुंदरता और पारिस्थितिक महत्व को और भी खास बनाता है। प्रवेग लिमिटेड के चेयरमैन डॉ. विष्णुकुमार पटेल ने हस्तांतरण पर कहा यह औपचारिक परिवर्तन प्रवेग और आईएचसीएल के साझा विज़न का प्रतीक है बंगाराम द्वीप को विलासिता और सतत पर्यटन का आदर्श बनाने की दिशा में। हमें पूरा विश्वास है कि आईएचसीएल के नेतृत्व में यह रिसॉर्ट आतिथ्य के नए आयाम छुएगा, साथ ही द्वीप की नाज़ुक पारिस्थितिकी को भी संरक्षित रखेगा।

आईएचसीएल अब रिसॉर्ट प्रबंधन के सभी पहलुओं का नेतृत्व करेगा, जिसमें संचालन, अतिथि सेवाएँ, खाद्य और पेय, मनोरंजन अनुभव और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। पोर्टफोलियो के तहत संपत्ति का एकीकरण इसे उन विशेष पर्यटकों के लिए एक प्रमुख गंतव्य बनाता है, जो एक शांतिपूर्ण और परिष्कृत द्वीप रिसॉर्ट की तलाश में हैं।

# मतदाताओं को इस एप पर मिलेंगी 40 से अधिक सुविधाएं, चुनाव आयोग ने दी नई जानकारी

**पटना, एजेंसी।** विधानसभा चुनाव से पहले मतदाताओं, राजनीतिक दलों के साथ ही चुनाव प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मियों के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने 40 से अधिक सुविधाओं वाली एप एकिनेट लांच करने की घोषणा की है। एप में आकर्षक यूजर इंटरफेस एवं सरल यूजर एक्सपीरियंस के साथ 40 से अधिक मोबाइल और वेब एप्लिकेशनों को समाहित करेगा। इससे उपयोगकर्ताओं को अनेक एप डाउनलोड करने और अलग-अलग लागिन याद रखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस डिजिटल पहल की परिकल्पना मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने मार्च 2025 में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के सम्मेलन में की थी, जिसमें निर्वाचन आयुक्त सुखबीर सिंह संधू एवं विवेक जोशी भी उपस्थित थे। एकिनेट के माध्यम से उपयोगकर्ता डेस्कटाप या स्मार्टफोन पर सभी आवश्यक चुनावी जानकारी तक पहुंच सकेंगे।

इसमें केवल अधिकृत निर्वाचन अधिकारी ही डेटा प्रविष्ट करेंगे, जिससे जानकारी की प्रामाणिकता सुनिश्चित हो सकेगी। किसी भी विवाद की स्थिति में विधिक प्रपत्रों में भरे गए प्राथमिक आंकड़े ही मान्य होंगे।

**इन अधिकारियों को मिलेगा लाभ:** एकिनेट से लगभग सौ करोड़ मतदाताओं

और 10.5 लाख बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ), 15 लाख राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ स्तर एजेंटों (बीएलए), 45 लाख मतदान अधिकारियों, 15,597 सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (एईआरओ), 4,123 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (ईआरओ) एवं 767 जिला निर्वाचन अधिकारियों (डीईओ) को लाभ मिलेगा। चुनाव आयोग इस प्लेटफार्म को विभिन्न श्रेणी की कसौटी पर कसने के बाद लॉन्च करेगा, ताकि कार्य प्रदर्शन एवं उपयोग में आसानी तथा साइबर सुरक्षा सुनिश्चित किया जाए। एकिनेट द्वारा प्रदान की जाने वाली जानकारी जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 एवं 1951 , निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम 1960 , निर्वाचन संचालन नियम 1961 तथा आयोग द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के तहत विधिक रूप से संरक्षित होगी।

## वॉरेन बफेट ने इंसान के अनुभव को एआई से ऊपर बताया, कहा- कोई नहीं ले सकता उनकी जगह

**नई दिल्ली, एजेंसी।** बर्कशायर हैथवे के चेयरमैन और दिग्गज निवेशक वॉरेन बफेट ने 3 मई को हुई वार्षिक जनरल मीटिंग के दौरान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में अपनी राय साझा करते हुए कहा कि कुछ भी कर सकता है, लेकिन वह अजीत जैन के

अनुभव की जगह कभी नहीं ले सकता। बफेट ने बर्कशायर के वाइस चेयरमैन अजीत जैन के बारे में कहा कि उनकी भूमिका कंपनी के बीमा ऑपरेशंस में अमूल्य रही है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर उन्हें अगले 10 वर्षों में .100 अरब निवेश करने का मौका मिले और उन्हें AI या एक इंसानी लीडर के बीच चयन करना हो, तो वे हमेशा अजीत जैन को ही चुनेंगे। अजीत जैन ने AI के बारे में संतुलित दृष्टिकोण अपनाया और इसके उपयोग में सतर्कता बरतने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने माना कि AI भविष्य में एक गेम चेंजर साबित होगा, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि बर्कशायर ने अभी तक इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश नहीं किया है। जैन ने बताया कि कंपनी ने AI में काफी कम निवेश f नहीं करना चाहते जब तक उन्हें इसके जोखिम और अवसर की स्पष्ट समझ न हो जाए। बर्कशायर हैथवे के लिए AI का इस्तेमाल अभी शुरुआती चरण में है। जैन ने कहा कि वे जब भी सही मौका देखेंगे, तब AI में बड़े कदम उठाने के लिए तैयार हैं। इस बीच, बर्कशायर का बीमा कारोबार जो लाखों डॉलर की रकम जुटाता है, इसके निवेश के लिए फ्लोट का इस्तेमाल किया जाता है।

# सैमसंग ने गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा, एस24 और एस24एफई पर आकर्षक डील्स की घोषणा की

**गुरुग्राम, एजेंसी।** भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज सीमित अवधि के ऑफर के तहत गैलेक्सी एस24 सीरीज़ पर रोमांचक डील्स की घोषणा की। भारत का नंबर 1 बिकने वाला प्रीमियम स्मार्टफोन गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा, जिसकी वास्तविक कीमत 129999 रुपये थी, आज से 84999 रुपये की अविश्वसनीय कीमत में उपलब्ध होगा। गैलेक्सी एस24, जिसकी वास्तविक कीमत 74999 रुपये थी, 44999 रुपये में, और गैलेक्सी एस24 एफई केवल 34999 रुपये से शुरू होने वाली कीमत पर उपलब्ध होगा।

गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा लाइव ट्रांसलेट, इंटरप्रेटर, चैट असिस्ट, नोट असिस्ट और ट्रांसक्रिप्ट असिस्ट जैसे फीचर्स के साथ आता है। यह सभी खूबियां फोन की सबसे मूल भूमिका यानी कम्युनिकेशन को बेहतर बनाती हैं। सैमसंग कीबोर्ड में पहले से बिल्ट इन एआई हिंदी सहित 13 भाषाओं में रीयल-टाइम में मैसेज अनुवाद कर सकती है। इसके अलावा, सैमसंग गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा पर गैलेक्सी एआई फीचर, नोट असिस्ट नोट-टेकिंग और ऑर्गनलाइजेशन को सरल बनाता है। इसमें ऑटो-फॉर्मेटिंग, समराइजिंग, स्पेलिंग सुधारना, और नोट्स का अनुवाद जैसे फीचर्स आते हैं। यूजर्स सैमसंग नोट्स ऐप खोलकर, नया नोट बनाकर, और नोट असिस्ट आइकन पर टैप करके इसे एक्सेस कर सकते हैं। गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा का ड्रॉइंग असिस्ट यूजर्स को एआई पावर्ड स्टाइल्स का उपयोग करके साधारण स्केच को इमेजेज में बदलने की सुविधा देता है। गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा गैलेक्सी के लिए स्नैपड्रैगन0 8 जेन 3 मोबाइल प्लेटफॉर्म से लैस है, यह अविश्वसनीय रूप से कुशल एआई प्रोसेसिंग के लिए उल्लेखनीय एनपीयू सुधार प्रदान करता है। यह पहला गैलेक्सी फोन है जिसमें टाइटेनियम फ्रेम है, जो डिवाइस की ड्यूरैबिलिटी बढ़ाता है और यह फोन लंबे समय तक चलता है। गैलेक्सी एस24 भारत का नंबर 1 बिकने वाला एंड्रॉयड स्मार्टफोन है। यह सुंदर वन-मास डिज़ाइन के साथ आता है और इसमें 50एमपी का ट्रिपल कैमरा सेटअप दिया गया है। गैलेक्सी एआई और एडवांस्ड नाइटोग्राफी क्षमताओं के साथ, गैलेक्सी एस24 के एआई ज़ूम से खींचे गए फोटो और वीडियो किसी भी स्थिति में, यहां तक कि ज़ूम इन करने पर भी शानदार होते हैं। गैलेक्सी एस24 पर पोर्ट्रेट स्टूडियो यूजर्स को एआई का उपयोग करके पोर्ट्रेट फोटो को विभिन्न कलात्मक शैलियों जैसे कॉमिक, 3ष्ठ कार्टून, वॉटरकलर, और स्केच में बदलने की अनुमति देता है। इसे गैलरी ऐप में फोटो चुनकर, एआई आइकन पर टैप करके, और पोर्ट्रेट स्टूडियो का चयन करके एक्सेस किया जा सकता है। स्मार्टफोन में कॉल असिस्ट की भी सुविधा है, जो फोन कॉल के दौरान वास्तविक समय में ट्रांसलेशन करता है और टेक्स्ट-आधारित सहायता भी दे सकता है। गैलेक्सी एस24 पर फोटो को रीसाइज़ और रीटच करने के लिए, यूजर्स गैलरी ऐप में बिल्ट-इन एडिटिंग टूल्स, जिसमें जेनरेटिव एडिट शामिल है, का उपयोग कर सकते हैं। एआई -संचालित एडिटिंग फीचर्स शैडो को ब्लर करके या रिफ्लेक्शन हटाने जैसे सुधार अपने आप कर सकते हैं।

काम कोई भी हो, गैलेक्सी एस24 अपने चिपसेट, डिस्प्ले और अन्य सुधारों के कारण अविश्वसनीय अनुभव प्रदान करता है। 6.2 इंच के डिस्प्ले के साथ, गैलेक्सी एस24 2600 निट्स की पीक ब्राइटनेस तक पहुंच सकता है। डिवाइस में 1-120 ॥5 का एडैप्टिव रिफ्रेश रेट भी है।

## भारतीय बौद्ध महासभा 12 मई को मनाएगी बुद्ध जयंती

**छिंदवाड़ा।** विश्व को समता शांति स्वतंत्रता बंधुता व न्याय का संदेश देकर आडंबर अंधश्रध्दा से मुक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित बुध्द धम्म की स्थापना करने वाले तथागत गौतम बुद्ध की जयंती 12 मई 25 को छिन्दवाड़ा स्थित डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकर तिराहे पर उत्साह के साथ मनाई जायेगी। भारतीय बौद्ध महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष समाज सेवक एड.रमेश लोखंडे ने बताया कि,जयंती स्थल पर सुबह 10 ⊃30 बजे महाकारुणिक तथागत गौतम बुद्ध एवं भारत में बुद्ध धम्म को पुनर्स्थापित करने वाले विश्व भूषण डॉ.बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर की प्रतिमाओं को पुष्प माल्यार्पण किया जायेगा। मोमबत्ती दीप प्रज्वलित कर पंचशील धम्म ध्वजारोहण किया जाएगा।तत्पश्चात सामुहिक बुद्ध वंदना,त्रिशरण पंचशील ग्रहण की जाएगी। प्रमुख धम्म बंधुओं का तथागत गौतम बुद्ध की जीवनी पर सारगर्भित उदबोधन होगा। बुद्ध जयंती समारोह में उपस्थित रहने की अपील की है।

## कलेक्टर के निर्देश पर चौरई क्षेत्र के उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण

**छिन्दवाड़ा।** कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार आज जिले के विकासखंड चौरई क्षेत्र के विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला उपार्जन समिति के सभी सदस्य तथा एसडीएम चौरई श्री प्रभात मिश्रा उपस्थित थे। अधिकारियों ने गेंहूँ उपार्जन केन्द्र रामगढ़, कुण्डा, गोपालपुर, कपूर्धा, मेघदोन, पचगाँव तथा चाँद का दौरा कर वहाँ की व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान उप संचालक कृषि श्री जितेंद्र कुमार सिंह, जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती गंगा कुमरे, डीएम नागरिक आपूर्ति निगम श्री एम.के. त्रिपाठी, जीएमसीसीबी श्री ए.के. जैन, एसडीओ कृषि श्री नीलकंठ पटवारी, जेएसओ श्री रवि मुकासी सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

## ग्राम पंचायत भालपानी के ग्राम बलीढाना में होने वाले बाल विवाह को रूकवाया

**छिन्दवाड़ा।** जिले के विकासखंड हर्रई के क्षेत्र बटकाखापा के अंतर्गत ग्राम पंचायत भालपानी के ग्राम बलीढाना में होने वाले बाल विवाह की गत दिवस शिकायत

प्राप्त हुई, जिस पर त्वरित कार्यवाही करते हुये जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास डॉ.हेमंत छेकर द्वारा बाल विवाह रूकवाया गया। इस संबंध में परिवार के सदस्यों से बात की गई और संबंधित थाना प्रभारी द्वारा भी समझाईश दी गई। जांच के दौरान बालिका की आयु 17 वर्ष 04 माह 23 दिन पाई गई। परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को समझाया गया कि बालिका का विवाह 18 वर्ष व बालक का विवाह 21 वर्ष के बाद ही संपन्न कराया जाये। परिवार के सदस्यों से इस आशय का कानूनी कार्यवाही के लिये पूर्ण जिम्मेदारी ली गई है।

## छिन्दवाड़ा में नीट-2025 परीक्षा शांतिपूर्ण संपन्न

### 11 परीक्षा केन्द्रों पर 4521 विद्यार्थी हुए शामिल

**छिन्दवाड़ा।** राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित नीट (यूजी)-2025 परीक्षा 04 मई

(रविवार) को छिन्दवाड़ा जिले के 11 परीक्षा केन्द्रों पर दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक शांतिपूर्ण संपन्न हुई। अद्यतन जानकारी के अनुसार इस परीक्षा के लिए जिले में कुल 4656 परीक्षार्थी दर्ज थे, जिनमें से 4521 परीक्षार्थी शामिल हुए और 135 अनुपस्थित रहे। परीक्षा के सफल एवं सुव्यवस्थित संचालन के लिए जिला प्रशासन द्वारा समस्त संबंधित अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई थी। इसमें कार्यपालिक मजिस्ट्रेट, जिला शिक्षा विभाग के अधिकारी, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारी शामिल थे, जिन्हें विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर निगरानी, समन्वय एवं आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

## राज्य जीएसटी के अधिकारी 10 वर्षो से जमे है क्या उन अधिकारियों का स्थानांतरण होगा

**छिंदवाड़ा।** म.प्र. की तबादला नीति लागू हो गई है, तीन वर्ष से जो अधिकारी ज्यादा पदस्थ उनका स्थानांतरण होना है। व्यापारियों ने बताया कि राज्य जी.एस.टी कार्यालय में पिछले 10 वर्षो से जमे अधिकारी है, उनका स्थानांतरण नहीं हो रहा है। बताया जाता है कि सभी अधिकारी अपना-अपना जेक लगाकर जमें हुये वे छिंदवाड़ा से जाना नहीं चाहते, व्यापारियों ने कहा कुछ अधिकारियों से उन्हें परेशानी है जो बेवजह व्यापरियों को परेशान कर रहे है।

## चेतावनी के बाद नपने शुरू किया नालों की सफाई कार्य

**परासिया।** नगर पालिका वार्ड नंबर 11 के पार्षद पवन सूर्यवंशी, वार्ड नंबर 10 के पार्षद श्री अनुज पाटकर, तथा वार्ड नंबर 9 के पार्षद श्री आशीष जायसवाल ने संयुक्त रूप से नगर पालिका प्रशासन को चेतावनी दी थी कि यदि 2 दिनों के भीतर वार्ड क्रमांक 9, 10 एवं 11 में नालों की सफाई का कार्य प्रारंभ नहीं किया गया, तो वे स्वयं वार्डवासियों के साथ नाले में उतरकर सफाई करेंगे। ज्ञात हो कि पिछले वर्ष मानसून के दौरान नालों की सफाई न होने के कारण नालों की पुलिया कचरे से जाम हो गई थी, जिससे भारी जलभराव हुआ और नाले का पानी नागरिकों के घरों में घुस गया।

# पुलिस ने पकड़ा कुख्यात चोरों का गिरोह

### 6 आरोपी गिरफ्तार, आरोपियों से 48 लाख का माल बरामद

**छिंदवाड़ा।** कोतवाली पुलिस ने कुख्यात चोर गिरोह को पकड़कर उसके पास से जिले के अलग अलग थानो में हुई चोरी की बारदातों में चोरी गये संपत्ति लगभग 48 लाख से अधिक की कीमत के मशरूका बरामद कर गिरोह के 6 सदस्यो को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक अजय पांडेय(आईपीएस)एवं अति. पुलिस अधीक्षक आयुष गुप्ता(आईपीएस) के मार्गदर्शन मे नगर पुलिस अधीक्षक अजय राणा एवं थाना प्रभारी कोतवाली उमेश गोल्हानी के नेतृत्व में एक विशेष पुलिस टीम का गठन कर अपराध के संबंध में दिशा निर्देश जारी किये गये थे । इसी क्रम मे गठित पुलिस टीम के द्वारा लगातार घटना स्थल के आस पास लगे सी सी टी वी कैमरे को खँगाला गया एवं मुखबिर तंत्र को सक्रिय कर आरोपी की तलाश पतासाजी की गई पतासाजी दौरान विशेष टीम को इस बात का पता करने मे सफलता मिली है ।

पुलिस टीम ने पतासाजी दौरान जानकारी जुटाई कि अंकित उर्फ भूत अपने साथियो के साथ मुंबई एवं गोवा तरफ घूम रहा है जो तकनीकी सहायता से ट्रेस कर अंकित उर्फ भूत एवं उसके अन्य दो साथियो को गोवा के एक बीच से पकड़ लिया गया जो संदेही अंकित उर्फ भूत बारीकी से पूछताछ की गई। पहले तो आरोपी के द्वारा पुलिस को गुमराह करते रहा कडाई से पूछताछ करने पर आरोपी के द्वारा एक संगठित गिरोह बनाकर प्लान के तहत अपने साथी आदित्य ठाकुर के साथ छिन्दवाडा जिला के कोतवाली थाना क्षेत्र के गुलाबरा मे ,हर्रई मे दो जगह, अमरवाड़ा मे दो जगह,चौरई मे दो जगह, उमरेठ मे एक जगह एवं सिवनी जिला मे केवलारी,कान्हीवाड़ा क्षेत्रो मे दिन के समय चोरी करना स्वीकार किया। तथा चोरी मे प्राप्त माल को खपाने के लिए परासिया निवासी आकाश कहार की मुख्य भूमिका बताई गई। पूछताछ मे अन्य आरोपी आदित्य ठाकुर, आकाश कहार द्वारा भी अपराध करना स्वीकार किये । तथा चोरी मे प्राप्त माल को योजनाबद्ध तरीके से अन्य साथी शुभम डहेरिया, ताहिर खान के साथ मिलकर आपस मे बांटकर कुछ माल व्यापारी अजय सोनी निवासी परासिया छिन्दवाडा को बेचना बताया । आरोपीगणो से प्रकरण मे चोरी हुआ मसरुका 430 ग्राम सोने के जेवर एवं 03 किलो चांदी के जेवर कुल कीमती लगभग 46 लाख रुपये एवं चोरी के पैसे से खरीदे हुये तीन आई-फोन मोबाईल कीमती 150000/- रुपये के एवं चोरी करने मे प्रयुक्त 220 पल्सर मोटर साईकल कीमती 01 लाख रुपये की जुमला मसरुका रकम 4850000/- रुपये का जप्त कर आरोपीगणो को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया। घटना का तरीका:- आरोपी अंकित उर्फ भूत के द्वारा दिन के समय रेकी कर अपने साथी आदित्य के साथ ताला लगे सूने मकान को चिन्हित कर ताला तोड़ कर चोरी करना और अन्य साथियो की मदद से चोरी के मशरूका को छिपाना एवं बेचना। इसके अलावा जिला सिवनी मे कान्हीवाडा, केवलारी मे चोरी की घटना करना स्वीकार किये है ।

### गिरफ्तार किए गए आरोपी

गिरफ्तार किये गये 6 आरोपियों में अंकित उर्फ भूत पिता राजू डहेरिया उम्र 19 वर्ष निवासी चांदामेटा छिन्दवाडा आदित्य उर्फ चीनू ठाकुर पिता राजू सिंह ठाकुर उम्र 18 वर्ष निवासी वार्ड नं. 01 परासिया जिला छिन्दवाडा ,आकाश पिता अरविंद कहार उम्र 22 वर्ष निवासी रिंग टाकीज वार्ड नं. 02 परासिया जिला छिन्दवाडा,शुभम उर्फ आर्यमन पिता शिवकुमार डहेरिया उम्र 24 वर्ष निवासी वार्ड नं. 04 न्यूटन चिखली परासिया जिला छिन्दवाडा ,ताहिर पिता रशीद खान उम्र 25 वर्ष निवासी वार्ड नं. 01 ईडीसी परासिया जिला छिन्दवाडा, अजय पिता योगेन्द्र सोनी उम्र 30 वर्ष निवासी न्यूटन थाना परासिया जिला छिन्दवाडा संगठित गिरोह के मुख्य सदस्य:- अंकित डेहरिया उर्फ भूत ,आकाश कहार,आदित्य ठाकुर।

## मशाल यात्रा से दी श्रद्धांजलि

**छिंदवाड़ा। अमर शहीद विक्की पहाड़े की पुण्यतिथि पर मशाल यात्रा निकाल कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।**

## शहर के विभिन्न वार्डो में होगा सड़कों का निर्माण

**छिन्दवाड़ा।** सांसद बंटी विवेक साहू पांढुर्णा शहर में विभिन्न सड़कों के निर्माण के लिए अपनी सांसद निधि से 18 लाख के निर्माण कार्यों की स्वीकृति देते हुए शहरवासियों को सड़कों की सौगात दी है। सांसद की निधि से सड़कों का निर्माण हो जाने से शहरवासियों की वर्षो पुरानी मांग पूरी हो सकेगी।उल्लेखनीय है कि पांढुर्णा भाजपा जिलाध्यक्ष संदीप मोहोड़, नगरपालिका अध्यक्ष संदीप घाटोड़े एवं भाजपा मंडल अध्यक्ष नरेश कलंबे की अनुशंसा पर सांसद श्री साहू ने अपनी सांसद निधि से पांढुर्णा शहर के शास्त्री वार्ड में दिलीप बालपांडे के घर से देवाजी फरकाडे के घर तक सीमेंट सड़क निर्माण के लिए 6 लाख, जलाराम वार्ड में गुजरखेड़ी रोड से श्रीमती मीनाक्षी ताई खुरसंगे के घर तक सीमेंट सड़क निर्माण के लिए 3 लाख, शंकर नगर वार्ड में भादे चाय वाले से किनकर के घर तक सीमेंट सड़क निर्माण के लिए 4 लाख एवं रानी दुर्गावती वार्ड में एतस कॉलेज से मेन रोड तक सीमेंट सड़क निर्माण के लिए 5 लाख की राशि स्वीकृत की है।सांसद श्री साहू ने बताया कि पांढुर्णा के विकास के लिए राशि की कमी नहीं की जायेगी, पांढुर्णा में भाजपा सरकार के सहयोग से ट्रिपल इंजन की सरकार काम कर रही है। पिछले दिनों पांढुर्णा प्रवास पर आये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी पांढुर्णा के विकास को लेकर फंड की कमी नहीं होने देने की बात कही थी। उन्होंने पांढुर्णा में नये उधोगों की जल्द स्थापना किये जाने का आश्वासन भी दिया था। शहर में सांसद निधि से सड़कों के निर्माण के लिए राशि दिये जाने पर भाजपा के तमाम पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आमजनों ने सांसद बंटी विवेक साहू का आभार व्यक्त किया हैं।

# कलेक्टर के निर्देश पर चौरई क्षेत्र के उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण

**छिन्दवाड़ा।** कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार आज जिले के विकासखंड चौरई क्षेत्र के विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिला उपार्जन समिति के सभी सदस्य तथा एसडीएम चौरई श्री प्रभात मिश्रा उपस्थित थे। अधिकारियों ने गेंहूँ उपार्जन केन्द्र रामगढ़, कुण्डा, गोपालपुर, कपूर्धा, मेघदोन, पचगाँव तथा चाँद का दौरा कर वहाँ की व्यवस्थाओं का जायजा लिया एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान उप संचालक कृषि श्री जितेंद्र कुमार सिंह, जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती गंगा कुमरे, डीएम नागरिक आपूर्ति निगम श्री एम.के. त्रिपाठी, जीएमसीसीबी श्री ए.के. जैन, एसडीओ कृषि श्री नीलकंठ पटवारी, जेएसओ रवि मुकासी मौजूद थे।

**भोपाल।** मध्य प्रदेश में पांढुरना जिले में जाम सांवली में हनुमान जी की लेटे हुए प्रतिमा है। ये प्रयागराज के अलावा संभव है या दूसरा स्थान है जहां हनुमान जी लेटे हुए हैं। **छायांकन --जगदीश कौशल भोपाल**

## लोक सेवा केंद्र आमला मे सीमांकन का आवेदन करने पर पीड़ित महिला से मारपीट

### सीमांकन नही किये जाने की पीड़ित अनुसूईया और संतोष यादव जनसुनवाई मे लिखित शिकायत

**सांध्य प्रकाश योगेश गुप्ता बैतूल।** थाना बोरदेही के अंर्तगत ग्राम नरेरा आमला निवासी अनुसूईया और उसके पति संतोष यादव ने जिला कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी को जनसुनवाई मे एस डी एम राजीव कहार से मिलकर उसकी निजी जमीन का सीमांकन नहीं किये जाने तथा गांव के दबंगों द्वारा जमीन पर कब्जा किये जाने को लेकर लिखित शिकायत की है। पीड़ित पति पत्नी अनुसूईया और संतोष यादव ने बताया कि उसकी निजी भूमि जिसका खसरा नंबर 149/26/1 अनुसईया एवं संदीप यादव 149/26/2/2 संतोष यादव के नाम पर दर्ज है। तथा उक्त भूमि पर मकान बनाकर निवास करते है। और दोनों पति पत्नी गाँव नरेरा में खेती का कार्य करते है। उनकी स्वअर्जित भूमि के अधिक हिस्से पर गाँव नरेश यादव नानू यादव और शिवराम यादव जोगी यादव द्वारा प्रमीला यादव सुरेश यादव तथा इनके अन्य सहयोगी द्वारा भूमि हड़पने की नियत से अवैध रुप से बल पूर्वक हिस्से पर कब्जा करने का प्रयास किया जा है। इसलिए लोक सेवा केंद्र तहसीलदार आमला को 11 मार्च 2025 को उक्त दोनों खसरा भूमि का सीमांकन करने आवेदन किया गया है। परन्तु आर आई पटवारी द्वारा आज तक भूमि का सीमांकन नहीं किया गया। बताया कि पिछले वर्ष लोक सेवा केंद्र आमला में सीमांकन का आवेदन दिया था। तब भी जमींन का सीमांकन नही किया गया। कहा कि कब्जा धारियो द्वारा पीड़ित महिला अनुसईया को बेहरमी से मारपीट कर उसके पुत्र का हाथ तक तोड़ दिया था। और खेत में आग लगा दी थी। घटना की रिपोर्ट करने पर थाना बोरदेही पुलिस ने नानू यादव शिवराम यादव प्रमीला यादव के खिलाफ 23 मार्च 25 को मामला दर्ज किया।जिसको लेकर कब्जा धारी सीमांकन करने पर अड़ंगे लगाते है। तथा मुझे और परिवार को गाँव छोड़कर जाने को कहते है। बोलते है कि अगर तुमने जमीन का सीमांकन करवाया या जमीन खाली करवाई तो जान से मार देंगे। पीड़ित अनुसूईया और संतोष यादव ने कलेक्टर श्री सूर्यवंशी से लोक सेवा केंद्र आमला को दिए गए सीमांकन आवेदन पर निजी भूमि का सीमांकन करवाकर जाने तथा कब्जा पाये जाने पर भूमि खाली कराये जाने की मांग की है।

### इनका कहना है

पीड़ित महिला अनुसुईया संतोष यादव ने भूमि सीमांकन नही किये जाने की लिखित शिकायत की है। तहसीलदार आमला को फोन कर दिया गया है। सीमांकन कर के आगे कार्यवाही की जायेगी।

**राजीव कहार,** एस डी एम बैतुल

## सक्रियता , संस्कार सृजन और संपर्क शीलता स्वामी अवधेशानन्द की शिक्षाएं

### शर्मा परिवार ने इसका श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया: -कैलाश परमार

**आष्टा।** ईश्वर की कृपा सदाचार और सात्विकता से ही यह संयोग बनता है जब चार पीढियां इकट्ठी हो कर परिवार में स्वर्ण सीढ़ी आरोहण जैसे दुर्लभ आयोजन का अवसर पाती है ।

रिवाजी संस्कार , द्विज सुलभ पावित्र्य और समरसता पूर्ण व्यवहार हो तो ऐसे आयोजन में आनन्द बढ़ जाता है । शर्मा परिवार ने बढ़ चढ़ कर अपने परिवार के प्रेरणा पुंज श्रद्धेय दादा जी के स्वर्ण सीढ़ी आरोहण कार्यक्रम में नगर भर के मित्रो और शुभचिंतकों को आमंत्रित करके सभी लोगों को शास्त्रोक्त संस्कारो से रूबरू कराया । यह एक सुखद अनुभव है। प्रभु प्रेमी संघ इस आयोजन को स्वामी जी द्वारा निर्देशित सक्रियता ,संस्कार रोपण ,सृजनशीलता और सम्पर्क शीलता की शिक्षाओं पर अमल का श्रेष्ठ उदाहरण मानता हैं ।

मंत्रोच्चारण के बीच संस्कार सम्पन्नता और परस्पर मेल मुलाकात से इस आयोजन में दिव्यता और भव्यता दिखाई दी । हम सभी पूज्य स्वामी अवधेशानन्द गिरिजी महाराज द्वारा स्थापित प्रभु प्रेमी संघ के सत्संग संचालक गोविंद शर्माजी के नवाचार और विनम्रता से अभिभूत हैं । यह उद्गार पूर्व नपाध्यक्ष तथा प्रभु प्रेमी संघ के संयोजक कैलाश परमार ने उक्त आयोजन में व्यक्त किए । स्थानीय शगुन गार्डन में आयोजित स्वर्ण सीढ़ी आरोहण संस्कार में पूर्व नपाध्यक्ष कैलाश परमार सहित प्रभु प्रेमी संघ के अध्यक्ष सुरेश पालीवाल , महासचिव प्रदीप प्रगति , भजन शास्त्री राम श्रीवादी , नरेंद्र कुशवाह , सुनील प्रगति , संजय जैन , प्रतीक महाडिग , सिंह वीरेंद्र परमार , आदि ने परिवार के बुजुर्ग सूरजमल शर्मा का केशरिया शाल और पुष्पमालाओं से अभिनन्दन करते हुए उन्हें बधाई दी ।

## केंद्र सरकार जातिगत जनगणना को शीघ्र चालू करके ही जनता को भरोसा दिला पाएगी: नारायण धोटे

**सांध्य प्रकाश बैतूल।** केंद्र में भाजपा सरकार द्वारा कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की नागरिक हित में सलाह और प्रस्ताव को स्वीकार करके अचानक से जातिगत जनगणना कराने की घोषणा कर दी है। बल्कि कांग्रेस पार्टी केंद्र सरकार के इस फैसले का पूरा समर्थन भी किया है। तो वहिं जिला पिछड़ा वर्ग कांग्रेस अध्यक्ष नारायण राव धोटे ने कहा कि भाजपा सरकार को जातिगत जनगणना किये जाने की समय अवधि भी स्पस्ट कर देना चाहिए था। उन्होंने बताया की श्री गांधी ने बिलकुल सही कहा कि टाइम लाइन बतानी होगी। अब सवाल है। कि जातिगत जनगणना का काम आखिरकर कब तक पूरा होगा। श्री गांधी ने कहा है। कि कांग्रेस जातिगत जनगणना को डिजाइन करने में आगे भी केंद्र सरकार की मदद करेगी। क्योंकि ये डिजाइन बहुत जरूरी है। कांग्रेस देश में जातिगत जनगणना के माध्यम से नए तरीके का विकास लाना चाहती है। चाहे ओबीसी दलित हो या आदिवासी देश में इनकी कितनी भागीदारी है। यह सिर्फ जातिगत जनगणना से पता चलना संभव है। श्री धोटे ने कहा है। कि राहुल गांधी के प्रस्ताव रखने पर केंद्र सरकार ने जातिगत जनगणना करवाने की स्वीकृति देकर हर बार की तरह देश की जनता का ध्यान आकर्षित किया है। लेकिन वहिं आशंका की वजह यह भी बतायी है। जैसे पूर्व में भी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने युवाओं को रोजगार देने तथा महंगाई कंट्रोल करने के साथ पन्द्राह लाख रुपए खाते में आने की बात कही गयी थी। जो आखिर झूठ साबित हुई थी। इसलिए केंद्र सरकार को शीघ्र अपनी घोषणा पर अमल करने की जरुवत है। वहि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का आभार माना है।

## पूर्व मंत्री सुखदेव पांसे प्रदेश कांग्रेस संगठन प्रभारी बने

### पीसीसी ने कांग्रेस संगठन एकता और एकग्रता के लिए बैतूल के 2 पूर्व विद्यायक को मध्यप्रदेश प्रभारी बनाया

**सांध्य प्रकाशयोगेश गुप्ता बैतूल।** मध्यप्रदेश मे लगातार भाजपा सरकार की चली आ रही है। जिससे प्रदेश स्तर पर भाजपा का संगठन अपने आप में बाहुबली हो चूका है। पिछले चुनावो के दौरान भाजपा ने सदस्यता अभियान चलाकर अपने संगठन में कार्यकर्ताओं की भारी सँख्या इकट्ठा करने में हद तक सफल रही। और प्रदेश स्तर पर कांग्रेस को भारी नुकसान भी हुआ। वहिं जिला बैतुल मे लगभग पिछले तीस वर्षो से कांग्रेस के सक्रिय नेता पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के विश्वसनीय रहे। जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुनील शर्मा भी कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए और विधान सभा चुनाव मे कांग्रेस को विपरीत परिणाम का सामना करना पडा था। जनता के बीच चर्चा हमेशा बनी रही की कांग्रेस को संगठन मे एकग्रता और सक्रियता लाने के लिये अनुभवी और जिम्मेदार व्यक्तित्व को संगठन की बड़ी जिम्मेदारी देना चाहिए। फिर प्रदेश कांग्रेस ने बैतुल वि.सभा के लोकप्रिय पूर्व विद्यायक निलय डागा को सेवादल कांग्रेस प्रदेश प्रभारी बनाया गया। और अब मुलताई वि.सभा से तीन बार विधायक रहे अनुभवी नेतृत्व प्रधान पूर्व कैबिनेट मंत्री को प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष बनाकर सुखदेव पांसे को प्रदेश कांग्रेस कमेटी का संगठन प्रभारी की जिम्मेदारी देकर भरोसा जताया है। पूर्व प्रदेश एन एस यु आई अध्यक्ष जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे ने कहा श्री पांसे की प्रभारी के रूप मे नियुक्ति को लेकर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं मे सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ है। श्री पांसे की नियुक्ति को लेकर प्रदेश भर में हर्ष है। बधाई देने वालों में मुख्य रूप से पूर्व मंत्री प्रताप सिंह,डॉ. महेश पाटनकर सेवादल कांग्रेस अध्यक्ष अनुराग मिश्रा,ओबीसी अध्यक्ष नारायण राव धोटे,करण चन्देलकर अर्जुन वामनकर, राजकुमार दीवान, मिथलेश राजपूत तरुण कालभोर,मोनिका निरापुरे,पुष्पा पेंड्राम दिनेश गोयल,सोनू खनूजा,दिलीप माथनकर संजय यादव, सुभाष देशमुख भूषण कांति,चंदू यादव विक्की सिंह, नेहरू सिंह राजपूत,नरेंद्र वाडिवा,सुनील भलावी सुरेश पंड्या अमरीश भाई,मोरु विश्वास,नितयी मंडल,ओम प्रकाश कवड़कर आशीष मालवीय,धर्मेंद्र शुक्ला, पहलवान सिंह, दिलीप यादव अनिल भुसारी, राहुल इवने,राजकुमार रायपुरे, सुभाष यादव, ऋषि दीक्षित राजकुमार मर्सकोले,मनीष मालवीय रामरतन बारसे,शैलेश गुबरेले वसीम कुरैशी, सत्तार अली,ताहिर भाई मानिक घोटे,सोमेश त्रिवेदी, प्रणय पाठक, मनीराम यादव,कौशल बावसे,मनोज धोटे, रत्नेश देशमुख,राजू माने, महेश उइके, सहित अन्य कांग्रेस जनो ने श्री पांसे को बधाई दी है।

## वैशाख की छट पर भीलट बाबा देव दरबार में लगा चमत्कारिक दरबार विशाल भंडारा भी हुआ

**आष्टा।** शनिवार को शहर के सेमिनरी रोड स्थित खेड़ापति मंदिर के पीछे चमत्कारिक स्थान भिलट देव बाबा के दरबार में दरबार सजा जिसमें बड़ी संख्या में आसपास के भक्त पहुंचे यहां पर आज वैशाख की छट पर विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया जिसमे भक्तों ने पहुंचकर प्रसादी ग्रहण की।

पडियार महेश मेवाड़ा ने बताया यहां स्थान अति ऐतिहासिक और चमत्कारी स्थान है यहां पर भक्तों की हर मनोकामना पूर्ण होती है। भक्त कैलाश दादा वर्मा ने बताया कि यहां पर आकर अच्छा लगा यह चमत्कारी और ऐतिहासिक स्थान है वैशाख की छट पर आज समिति ने विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें शहर के नागरिक भी पहुंचे और प्रसादी ग्रहण की।

कार्यक्रम में पडियार महेश मेवाड़ा, बलराम सोनी, शिव मेवाड़ा, अर्जुन सिंह मेवाडा ,विष्णु पाटीदार, कैलाश दादा वर्मा ,जगदीश पंडित आदि शामिल हुए।

# प्रदेश में आज भी जारी रहेगा बारिश और ओले का दौर, 4 दिन मौसम के बदले रहेंगे मिजाज

**भोपाल।** प्रदेश में मई में बारिश सा माहौल है। कई जिलों में लगातार तेज बारिश हो रही है साथ में ओले भी गिर रहे हैं। मौसम विभाग का कहना है कि अगले 4 दिन सिस्टम एक्टिव रहने की वजह से ओले बारिश के साथ तेज आंधी का दौर बना रहेगा। रविवार को इंदौर में रिकॉर्ड पौने 3 इंच पानी गिर गया, जबकि भोपाल समेत कई जिलों में ओले गिरे। ऐसा ही मौसम सोमवार को भी बना रहेगा। सोमवार को पूर्वी हिस्से मैहर, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में बारिश के साथ ओले गिर सकते हैं। ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी में हवा की रफ्तार 60 किमी प्रतिघंटा से अधिक रह सकती है। इंदौर, भोपाल, जबलपुर, उज्जैन, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, बुरहानपुर, खरगोन, खंडवा, हरदा, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, कटनी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी और बारिश का दौर जारी रहेगा।

### पश्चिमी विक्षोभ से बदला प्रदेश का मौसम

मौसम विभाग के सीनियर वैज्ञानिक वेद प्रकाश ने बताया कि वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन और टर्फ की वजह से पूरे प्रदेश में मौसम बदला हुआ है। रविवार को कई जिलों में आंधी, बारिश हुई और ओले गिरे। ऐसा ही मौसम सोमवार को भी बना रहेगा। कुछ जिलों में ओले गिरने का अलर्ट भी किया है। कहीं-कहीं हवा की रफ्तार 50 से 60 किमी प्रतिघंटा तक रह सकती है।

### कई जिलों में तेज बारिश हुई ओले भी गिरे

रविवार को आंधी-बारिश और ओले गिरने का दौर जारी रहा। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, देवास और खंडवा में तेज बारिश के साथ ओले गिरे। इंदौर में गरज-चमक और तेज हवा के साथ शाम 5 बजे से तेज बारिश शुरू हो गई, जो देर रात तक जारी रही। मौसम विभाग के अनुसार, सुबह 8.30 से शाम साढ़े 5 बजे के बीच इंदौर में 70 मिमी यानी, पौने 3 इंच पानी गिर गया। भोपाल में बारिश के साथ ओले भी गिरे हैं। उज्जैन में करीब आधा इंच पानी गिर गया है। इधर, कई शहरों में दिन के तापमान में गिरावट हुई है। भोपाल में 37 डिग्री, इंदौर में 36.2 डिग्री, ग्वालियर में 38.5 डिग्री, उज्जैन में 41 डिग्री और जबलपुर में पारा 37.5 डिग्री दर्ज किया गया। एक ही दिन में 3 से 4 डिग्री की गिरावट हुई है। वहीं, खंडवा में पारा 42.5 डिग्री, खरगोन में 42.4 डिग्री, नरसिंहपुर में 42 डिग्री, खजुराहो में 40.8 डिग्री और नर्मदापुरम में 40.3 डिग्री सेल्सियस रहा।

### 4 दिन तक ऐसा ही मौसम रहने के आसार

5 मई को मैहर, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी,मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में बारिश के साथ ओले गिर सकते हैं। ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी में हवा की रफ्तार 60 किमी प्रतिघंटा से अधिक रह सकती है। इंदौर, भोपाल, जबलपुर, उज्जैन, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, बुरहानपुर, खरगोन, खंडवा, हरदा, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, कटनी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी और बारिश का दौर जारी रहेगा।

6 मई को इंदौर, भोपाल, जबलपुर, उज्जैन, मैहर, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, हरदा, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अलीराजपुर, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, कटनी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी और बारिश का दौर जारी रहेगा।

7 मई को ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, जबलपुर, डिंडौरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, कटनी, मैहर, सीधी, सिंगरौली, मऊगंज, रीवा, सतना, पन्ना, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगोन, खंडवा और बुरहानपुर में बारिश हो सकती है। 8 मई को ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर, इंदौर, देवास, सीहोर, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, नर्मदापुरम, बैतूल, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, दमोह, कटनी, जबलपुर, सिवनी, मंडला, बालाघाट, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी और बारिश वाला मौसम रह सकता है।

## एबीवीपी का छात्र आक्रोश धरना, आज फार्मेसी काउंसिल के विरोध में प्रदर्शन

**भोपाल।** मध्यप्रदेश फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया की कथित असक्षम कार्यप्रणाली के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) सोमवार 5 मई को छात्र आक्रोश धरना का आयोजन कर रहा है। यह प्रदर्शन फार्मेसी छात्रों की समस्याओं और काउंसिल की

लापरवाह व्यवस्था के खिलाफ किया जा रहा है। धरना सुबह 11.30 बजे से भोपाल स्थित मध्यप्रदेश फार्मेसी काउंसिल कार्यालय के बाहर आयोजित किया। बड़ी संख्या में फार्मेसी छात्र और एबीवीपी कार्यकर्ता शामिल हुए। परिषद ने काउंसिल पर आरोप लगाया है कि वह छात्रों की समस्याओं को लेकर उदासीन है और प्रमाणपत्र जारी करने, रजिस्ट्रेशन, वेरिफिकेशन जैसे मामलों में भारी देरी की जा रही है। एबीवीपी का कहना है कि यदि समय रहते सुधार नहीं हुआ, तो आंदोलन को प्रदेशभर में व्यापक स्तर पर चलाया जाएगा। परिषद ने काउंसिल से तत्काल सुधारात्मक कदम उठाने की मांग की है। धरने में छात्रों ने अपनी मांगों को लेकर नारेबाजी की ज्ञापन सौंपा।

गांधी मेडिकल कालेज के छात्रों का विरोध प्रदर्शन

आज मां बगलामुखी के प्रकट उत्सव पर आयकर कॉलोनी स्थित बगलामुखी मंदिर में हवन पूजन किया गया आरती की गई माता रानी के मंदिर के मुख्य महंत रवि दास जी महाराज ने बताया सठ दर्शन संगठन के नए अध्यक्षकी घोषणा कर चुना जायेगा।

नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने आराधना नगर कंकरीट रोड का भूमि पूजन किया

## पुलिस प्रशिक्षण केंद्र PTS आने वाले TI और SI का दो साल तक नहीं होगा ट्रांसफर

**भोपाल।** मध्यप्रदेश के पुलिस विभाग ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है, जिसमें पुलिस प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अधिकारियों के ट्रांसफर और नव आरक्षकों की भर्ती के संबंध में नए नियम लागू किए गए हैं। राज्य के विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में 4 हजार 4 सौ 44 नव आरक्षकों को भेजा जाएगा और टीआई और एसआई को अब प्रशिक्षण केंद्रों में कम से कम दो साल तक रहकर प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी सौंपी जाएगी।

**नव आरक्षकों की भर्ती और प्रशिक्षण**- मध्यप्रदेश पुलिस विभाग ने हाल ही में राज्य के विभिन्न जिलों में 4 हजार 4 सौ 44 नव आरक्षकों की भर्ती प्रक्रिया शुरू की है। ये नव आरक्षक राज्य के आठ प्रमुख पुलिस प्रशिक्षण केंद्रों में भेजे जाएंगे। इनमें पीटीएस रीवा, उमरिया, पचमढ़ी, इंदौर, उज्जैन, भौरी, सागर और तिघरा ग्वालियर शामिल हैं। इन सभी केंद्रों में प्रशिक्षकों की संख्या को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है कि नव आरक्षकों के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

**पुलिस प्रशिक्षण नीति में बदलाव**- पुलिस प्रशिक्षण की नीति में सुधार के लिए काम किया जा रहा है। एडीजी राजाबाबू सिंह ने बताया कि इस समय एक नई पुलिस प्रशिक्षण नीति तैयार की जा रही है, जिसमें प्रशिक्षकों के चयन, प्रशिक्षण अवधि और अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया जाएगा।

## 2012 से 2017 बैच के मप्र के 15 आईएएस अधिकारी मसूरी अकादमी में लेंगे ट्रेनिंग

**भोपाल।** मध्यप्रदेश के 2012 से 2017 बैच के 15 आईएएस अधिकारी मसूरी स्थित लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में ट्रेनिंग लेंगे। यह ट्रेनिंग 12 मई से 6 जून 2025 तक आयोजित की गई है।

राज्य शासन सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार 2012 बैच के नीरज कुमार सिंह दीपक आर्य और सुभाष कुमार द्विवेदी, 2013 बैच के एस कृष्ण चैतन्य, 2014 बैच की श्रीमती अंजू पवन भदोरिया, 2015 बैच की शीला दाहिमा और विदिशा मुखर्जी,2016 बैच के किरोड़ी लाल मीणा, गौरव बैजल, मिशा सिंह और स्वप्निल जी वानखड़े और 2017 बैच के विवेक कुमार,रोहित सिसोनिया, राहुल नामदेव धोटे और दिव्यांक सिंह इस ट्रेनिंग में भाग लेंगे।

मध्यप्रदेश शासन
सामान्य प्रशासन विभाग
मंत्रालय
// आदेश //

क्रमांकः ई 13/07/2025/5/1 भोपाल, दिनांकः 02 मई, 2025

राज्य शासन एतद द्वारा निम्नलिखित भाप्रसे अधिकारियों को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में **दिनांक 12 मई, 2025 से 06 जून, 2025 तक** आयोजित मिड कैरियर ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर आएएएस आफिसर्स- **(फेस-3, राउन्ड-22)** में भाग लेने हेतु अनुमति प्रदान करता है :-

| क्र | अधिकारी का नाम एवं आवंटन वर्ष | वर्तमान पदस्थापना |
|---|---|---|
| 1. | श्री नीरज कुमार सिंह (2012) | संचालक (परियोजना) लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, मध्यप्रदेश भोपाल |
| 2. | श्री दीपक आर्य (2012) | मुख्य कार्यपालन अधिकारी, मध्यप्रदेश ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण, भोपाल |
| 3. | श्री सुभाष कुमार द्विवेदी (2012) | अपर सचिव, मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग |
| 4. | श्री एस कृष्ण चैतन्य (2013) | प्रबंध संचालक, मेट्रो रेल कार्पोरेशन लिमिटेड, भोपाल |
| 5. | श्रीमती अंजू पवन भदौरिया (2014) | मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, रायसेन |
| 6. | सुश्री शीला दाहिमा (2015) | उप सचिव, मध्यप्रदेश शासन, सहकारिता विभाग |
| 7. | श्रीमती विदिशा मुखर्जी (2015) | अपर प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड, भोपाल |
| 8. | श्री किरोड़ी लाल मीना (2016) | अपर आयुक्त, नगरीय प्रशासन एवं विकास, मध्यप्रदेश, भोपाल |
| 9. | श्री गौरव बैनल (2016) | अपर कलेक्टर, जिला इन्दौर |
| 10. | सुश्री मिशा सिंह (2016) | अपर कलेक्टर, जिला जबलपुर |
| 11. | श्री स्वप्निल जी. वानखड़े (2016) | अपर कलेक्टर, जिला सतना |
| 12. | श्री विवेक कुमार (2017) | मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, ग्वालियर |
| 13. | श्री रोहित सिसोनिया (2017) | अपर आयुक्त, नगर पालिक निगम, इन्दौर |
| 14. | श्री राहुल नामदेव धोटे (2017) | उप सचिव, मध्यप्रदेश शासन, नर्मदा घाटी विकास विभाग तथा उप सचिव, मध्यप्रदेश शासन, जल संसाधन विभाग (अतिरिक्त प्रभार) |
| 15. | श्री दिव्यांक सिंह (2017) | मुख्य कार्यपालन अधिकारी, स्मार्ट सिटी, इन्दौर |

मध्यप्रदेश के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार

## केंद्र में 2015 बैच के आईएएस अधिकारी गृह मंत्रालय में स्थानांतरित

**नई दिल्ली।** भारतीय प्रशासनिक सेवा में 2015 बैच के आईएएस अधिकारी शशांक मणि त्रिपाठी, जो वर्तमान में सहकारिता मंत्रालय में उप सचिव के रूप में कार्यरत हैं, को उसी पद पर गृह मंत्रालय में स्थानांतरित किया गया है। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार, कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने त्रिपाठी को गृह मंत्रालय में स्थानांतरित करने की सिविल सेवा बोर्ड की सिफारिश को मंजूरी दे दी है।वे 30 अगस्त, 2028 तक नई भूमिका में कार्य करेंगे - केंद्रीय स्टाफिंग योजना के तहत उनकी चार साल की केंद्रीय प्रतिनियुक्ति का शेष कार्यकाल - या अगले आदेश तक, जो भी पहले हो। त्रिपाठी की केंद्रीय प्रतिनियुक्ति 31 अगस्त, 2024 को शुरू होगी।

## सोयाबीन-डॉलर चना उछले, मूंग लुढ़की ! जानिए प्याज-लहसुन के ताज़ा रेट

**इंदौर।** आज 5 मई 2025 को इंदौर मंडी में सोयाबीन का न्यूनतम भाव 4,000 और अधिकतम 4,450 प्रति क्विंटल रहा। डॉलर चना की कीमतें 7,000 से 9,500 प्रति क्विंटल के बीच दर्ज की गईं। इन दोनों फसलों के दामों में हाल ही में वृद्धि देखी गई है, जो किसानों और व्यापारियों के लिए सकारात्मक संकेत है।

मूंग की कीमतों में आज गिरावट देखी गई। इसका न्यूनतम भाव ?6,500 और अधिकतम ?7,500 प्रति क्विंटल रहा। कीमतों में यह गिरावट बाजार में बढ़ती आवक और मांग में कमी के कारण हो सकती है।

**अनाज भाव क्विंटल के अनुसार**
सोयाबीन- 3700 से 4236
गेहूं- 2700 से 3850
गेहूं सुजाता- 2300
मक्का- 3200 से 3800
डॉलर चना- 6700 से 9800
देसी चना- 5100 से 7500
चना कांटा- 4100
आमचूर- 3500
मसूर- 4200 से 6900
मूंग- 4700 से 7700
मूंग एवरेज- 4500 से 6200
तुअर- 3450 से 6500
तुअर सफेद महाराष्ट्र- 3200 से 6800
निमाड़ी तुअर- 3050 से 5800
सरसों- 3150 से 5250
सरसों निमाड़ी- 5280 से 6000
उड़द बोल्ड- 6200
उड़द मीडियम- 6100 से 7500
हलका उड़द- 5700 से 7420

**सब्जी भाव 10 किलो के अनुसार**
सेब- 5500 से 12200
केला- 400 से 600
टमाटर- 600 से 1800
कद्दू- 268 से 600
खीरा- 400 से 800
करेला- 650 से 700
लौकी- 300 से 500
बेंगन- 280 से 340
फुल गोभी- 600 से 1000
अदरक- 250 से 700
हरी मिर्च-1500 से 3000
पत्ता गोभी- 400 से 800
सहजन- 250 से 500
धनिया- 295 से 800
शिमला मिर्च 220 से 700
टेंसी 190 से 300
नींबू 1800 से 4500

**आलू भाव 10 किलो के अनुसार**
एक्स्ट्रा सुपर आलू- 3500 से 3500
गुल्ला आलू- 3000 से 4000
ज्योति आलू- 1400 - 1800
चिप्सोना आलू- 1200 - 1400
छांटन आलू- 1000 से 2000

**प्याज भाव क्विंटल के अनुसार**
एक्स्ट्रा सुपर प्याज- 4800 से 5000
सुपर प्याज- 4100 से 4500
एवरेज प्याज- 3700 से 3800

**लहसुन भाव क्विंटल के अनुसार**
एक्स्ट्रा सुपर लहसुन- 24800 से 28000
सुपर लहसुन- 18800 से 19000
एवरेज लहसुन- 16100 से 17000
मीडियम लहसुन- 13900 से 15000
हलकी लहसुन- 5400 से 11000

## उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मीडिया सलाहकार ताहिर अली को 40वीं वैवाहिक वर्षगाँठ पर दी शुभकामनाएँ

**भोपाल।** उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपने मीडिया सलाहकार श्री ताहिर अली को उनकी विवाह की 40वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने श्री ताहिर अली को मंत्रालय भोपाल में पुष्पगुच्छ भेंट कर सुखद, स्वस्थ एवं समृद्ध दांपत्य जीवन की कामना की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने श्री ताहिर अली और उनकी धर्मपत्नी को इस पावन अवसर पर हार्दिक बधाई दी और प्रेम, विश्वास और सौहार्द से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने की कामना की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के विशेष सहायक श्री चन्द्रप्रताप गोहल, निज सचिव श्री आनंद भट्ट, ओएसडी श्री अशोक शर्मा और जनसंपर्क अधिकारी श्री अंकुश मिश्रा उपस्थित थे। सभी ने श्री ताहिर अली को पुष्पगुच्छ प्रदान कर हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उल्लेखनीय है कि श्री ताहिर अली विगत 21 वर्षों से उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल के साथ मीडिया समन्वय एवं जनसंपर्क गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। उनके कुशल नेतृत्व, लेखन क्षमता एवं मीडिया के प्रति सजग दृष्टिकोण ने उन्हें एक प्रतिष्ठित और विश्वसनीय सलाहकार के रूप में स्थापित किया है। उप मुख्यमंत्री कार्यालय से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी श्री अली को शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।